पी. एण्ड एस. बैंक

राजभाषा

अंकुर

जून 2016

ੴ ਸ੍ਰੀ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਜੀ ਕੀ ਫ਼ਤਹਿ ॥

पंजाब एण्ड सिंध बैंक

ਪੰਜਾਬ ਐਂਡ ਸਿੰਧ ਬੈਂਕ

Punjab & Sind Bank

(राजभाषा विभाग)

पंजाब एण्ड सिंध बैंक

को

उत्कृष्टता पुरस्कार

पंजाब एण्ड सिंध बैंक ने एमएसएमई क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य-निष्पादन के लिए उत्कृष्टता पुरस्कार जीता। नई दिल्ली में फेडरेशन ऑफ इंडस्ट्रीज ट्रेड एंड सर्विसेज के कार्यक्रम में केंद्रीय सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्री कलराज मिश्र, हमारे बैंक के कार्यकारी निदेशक श्री अरविंद कुमार जैन को पुरस्कार देते हुए।

पंजाब एण्ड सिंध बैंक
प्रधान कार्यालय राजभाषा विभाग की हिंदी पत्रिका
राजभाषा अंकुर
(केवल आंतरिक वितरण हेतु)
'बैंक हाउस', प्रथम तल, 21, राजेन्द्र प्लेस, नई दिल्ली-110 125

जून, 2016

मुख्य संरक्षक
श्री जतिन्दरबीर सिंह, आई.ए.एस.
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

संरक्षक
श्री एम. के. जैन एवं श्री ए. के. जैन
कार्यकारी निदेशक

मुख्य संपादक
श्री दीन दयाल शर्मा
महाप्रबंधक (राजभाषा)

संपादक व प्रकाशक
श्री राजिंदर सिंह बेक्टी
मुख्य प्रबंधक व
प्रभारी, राजभाषा

संपादक मंडल
श्री कंवर अशोक
श्री राजीव कुमार राय
वरिष्ठ प्रबंधक, राजभाषा
डॉ. नीरू पाठक
प्रबंधक
श्री सोनी कुमार
राजभाषा अधिकारी
ई-मेल : hindipatrika@psb.co.in

पंजीकरण सं. : एफ. 2(25) प्रेस. 91

'राजभाषा अंकुर' में प्रकाशित सामग्री में दिए गए विचार संबंधित लेखकों के अपने हैं। पंजाब एण्ड सिंध बैंक का प्रकाशित विचारों से सहमत होना ज़रूरी नहीं है। सामग्री की मौलिकता एवं कॉपी राइट अधिकारों के प्रति भी लेखक स्वयं उत्तरदायी है।

मुद्रक : मोहन प्रिंटिंग प्रेस
5/30ए, कीर्ति नगर औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-110015
फोन : 98100 87743

विषय-सूची

क्र.सं.	विवरण	पृष्ठ सं.
1.	संपादक मंडल / विषय-सूची	1
2.	आपकी कलम से	2
3.	संपादकीय	3
4.	योग करें निरोग	4-5
5.	छोटी-छोटी बातों...... (मराठी लेख हिंदी रूप सहित)	6-9
6.	हमें इन पर गर्व है	10
7.	विमोचन/विशेष उपलब्धि	11
8.	चरैवेति/कार्टून कोना	12-13
9.	बदलते बैंकिंग स्वरूप में भाषा की भूमिका	14-15
10.	राजभाषा के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने हेतु उपाय	16-20
11.	गुरुपर्व	21
12.	संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उपसमिति.....	22-23
13.	गुरुपर्व - छबील एवं लंगर	24
14.	ग्राहक के मुख से	25
15.	मूल अधिकार एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता	26-27
16.	आंचलिक कार्यालय, फरीदकोट......	28
17.	धार्मिक आयोजन	29
18.	निज भाषा उन्नति...../ज़रा सोचिए	30-31
19.	काव्य मंजूषा	32
20.	वित्त मंत्रालय-वित्तीय सेवाएं की समीक्षा बैठक	33
21.	ट्यूलिप मेनिया	34-35
22.	बैठक/निरीक्षण	36
23.	नराकास उपलब्धियाँ	37
24.	बैंकिंग व्यवसाय नैतिक गुणों की चाबी	38-39
25.	वार्षिक कार्यक्रम	40
26.	हिंदी/पंजाबी कार्यशाला	41
27.	आगरा : ऐतिहासिक नगर	42-44

आपकी कलम से.....

आदरणीय संपादक महोदय,

बैंक की गृह पत्रिका राजभाषा अंकुर का मार्च, 2016 अंक प्राप्त हुआ। पत्रिका का आवरण पृष्ठ जल संरक्षण, पर्यावरण व मानव जीवन का अनूठा संगम प्रतीत होता है। आंतरिक पृष्ठों की साज-सज्जा अनुपम है। लेख रहिमन पानी राखिए ..... जहाँ पानी के सदुपयोग व संरक्षण के लिए प्रेरित करता है वहीं बढ़ते पर्यावरण प्रदूषण के आधुनिक वातावरण में लेख "सौर ऊर्जा का उपयोग" सराहनीय है। क्षेत्रीय भाषाओं में लेख के साथ-साथ उनका हिंदी अनुवाद भारतीय संस्कृति की विभिन्नता में एकता को चरितार्थ करता है। 20वें अखिल भारतीय राजभाषा अधिकारी सम्मेलन संबंधी छायाचित्र बैंक के राजभाषा कार्यान्वयन के प्रभावी दृष्टिकोण को दर्शाता है। प्रधान कार्यालय के विभिन्न विभागों में "मस्तिष्क मंथन" कार्यक्रम संबंधी छायाचित्र बैंक की वित्त मंत्रालय, वित्तीय सेवाएं विभाग द्वारा प्रदत्त दिशा-निर्देशों के प्रति अनुपालन व सक्रिय निर्वहन को प्रदर्शित करता है। यह देखकर प्रसन्नता हुई कि अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री जतिन्दरबीर सिंह के भोपाल दौरे के छायाचित्र को पत्रिका में स्थान प्रदान किया गया है इस प्रकार के छायाचित्र कर्मचारियों को पत्रिका में सहभागिता करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। "बजट शब्दावली" लेख बैंक कर्मचारियों के लिए निश्चित तौर पर उपयोगी है। पत्रिका को नित नई ऊंचाइयों तक पहुँचाने के लिए संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई।

पंकज द्विवेदी
- आंचलिक प्रबंधक, भोपाल

अपने बैंक की 'राजभाषा अंकुर' पत्रिका का मार्च 2016 का अंक प्राप्त हुआ। इस पत्रिका के अध्ययन के बाद पाया गया कि इस पत्रिका में जो भी सामग्री प्रकाशित की गई है, उसमें वर्तमान बैंकिंग परिवेश राजभाषा संबंधी जानकारी बहुत ही लाभदायक ज्ञानवर्धक है, इसमें सम्मिलित बैंकिंग संबंधी रचनाओं में वर्तमान परिवेश में बैंकिंग उद्योग की झलक नज़र आती है। यह पत्रिका अब पंजाब एण्ड सिंध बैंक की पहचान बन चुकी है। अपने बैंक के कलेण्डर की मांग की तरह अब 'राजभाषा अंकुर' की मांग उठने लगी है, सम्पूर्ण बैंकिंग जगत 'राजभाषा अंकुर' पत्रिका का अंक प्राप्त करने के लिए उत्सुक रहता है तभी तो विभिन्न मंचों पर इस पत्रिका को पुरस्कार प्रदान किए जा रहे हैं इस पत्रिका में 'बजट शब्दावली' नामक लेख बहुत ही उपयोगी जानकारी से परिपूर्ण है। 'सौर ऊर्जा का उपयोग' तथा 'प्रकृति का मशीनीकरण' लेख भी अपना अलग ही स्थान लिए हुए है। इस पत्रिका को बैंकिंग जगत के सम्मुख रखने पर पत्रिका के लेखक, सम्पादक मण्डल, प्रकाशक सभी को हार्दिक बधाई प्रेषित करता हूँ। अगले अंक की प्रतीक्षा में......

प्रवीण भोगिया
आंचलिक प्रबंधक, गुड़गांव

मुझे मार्च 2016 का अंक प्राप्त हुआ। अंक का आवरण पृष्ठ ही हमें वर्तमान समस्या और हमारे उत्तरदायित्वों की ओर संकेत करता हुआ प्रतीत हो रहा है। यह अति प्रसन्नता की बात है कि इस पत्रिका को दिल्ली बैंक नराकास से प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ है, वहीं भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा राजभाषा शील्ड पुरस्कार के लिए भी चयनित हुई है। पत्रिका के फुटनोट पर दिए गए कोटेशन कहीं न कहीं हमें प्रेरक संदेश देते दिखाई देते हैं और अनचाहे ही हमसे जुड़ जाते हैं। पत्रिका का प्रथम लेख रहिमन पानी राखिए..... सोच से हटकर है..... जहाँ यह समस्या की ओर हमारा ध्यान आकर्षित करता है, वहीं हमें मौलिक समाधान भी देता है। श्री अनिल नागर का सौर ऊर्जा का उपयोग वर्तमान परिप्रेक्ष्य की जानकारी देता है। भारती का लेख प्रकृति मशीनीकरण: वैज्ञानिक चिंता कहीं न कहीं हमारी चिंताओं को कम करने के लिए पर्याप्त है। सदैव की भांति इस बार भी क्षेत्रीय भाषा असमिया की कहानी काफी प्रेरक है। डॉ. कुलवंत सिंह शेरगी का लेख हिंदी अनुवाद : जटिलता एवं समाधान, दर्शन सिंह जग्गी जी का लेख बजट शब्दावली, देवेश मिश्र का लेख हमारी मातृभाषा हमारा परिचय, एवं डॉ. नीरू पाठक का लेख महारानी अहिल्याबाई होल्कर हमें नई-नई जानकारियाँ देता है। श्री प्रदीप कुमार राव की कहानी अपराजित मानवीय संवेदनाओं के चित्र का उकेरता है। पत्रिका के विभिन्न पृष्ठों पर दिए गए चित्र बैंक की राजभाषायी गतिविधियों और सफलताओं की ओर बरबस ही आकर्षित करते हैं और कहीं न कहीं प्रेरणा सूत्र भी देते हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि पूरी पत्रिका में प्रूफ संबंधी त्रुटियाँ ढूंढने से भी नहीं मिली। इसके लिए सम्पादक मंडल बधाई के पात्र हैं।

जगमीत सिंह पसरीचा
- आंचलिक प्रबंधक, मुम्बई

अंकुर मार्च 2016 का अंक पढ़ा। अच्छा लगा। पानी का महत्व दर्शाते हुए लेखकों ने अच्छे सुझाव दिए। मैं विशेषतया पवन कुमार जैन को उनके लेख 'रहिमन पानी राखिए' के लिए बधाई देता हूँ। अनिल कुमार दत्ता का लेख 'कार्टून', नेहा कुमारी की कविता 'ग्रामीण का सार', डॉ. नीरू पाठक का लेख 'महारानी अहिल्या बाई होल्कर' सराहनीय हैं। प्रदीप कुमार राव की कहानी 'अपराजित' दिल को छू गई। अंकुर के संपादक-मंडल के सभी सदस्यों को बधाई।

उपदेश सिंह सचदेवा
- सेवानिवृत्त सहायक महाप्रबंधक

संपादकीय

साथियो,

अंकुर के माध्यम से आपसे संवाद स्थापित करना और अपने मन की बात पत्रिका के माध्यम से आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करने में मुझे बेहद प्रसन्नता होती है। जिस प्रकार बैंक की लाभप्रदता का आधारभूत स्तंभ है उसका ग्राहक, उसी प्रकार किसी भी पत्रिका की सफलता का मापदंड उसके पाठकों द्वारा भेजी गई प्रतिक्रिया होती है। आपके द्वारा भेजी गई प्रतिक्रिया न केवल हमारा उत्साह बढ़ाती है बल्कि पत्रिका के उत्तरोत्तर विकास में भी सहायक सिद्ध होती है। मुझे यह बताते हुए अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा 24 मई, 2016 को मुम्बई में भारतीय रिजर्व बैंक के ''राजभाषा स्वर्ण जयंती समारोह'' में हमारे बैंक की पत्रिका ''राजभाषा अंकुर'' को राष्ट्रीय स्तर पर राजभाषा शील्ड प्राप्त हुई है।

जिस प्रकार समकालीन साहित्य उस समाज का आईना होता है उसी प्रकार पत्रिका भी, किसी संस्था विशेष की समग्र रूप में झलक दिखलाती है। हमारी पत्रिका भी इसी विशेषता को संजोए न केवल विविध साहित्यिक विधाओं को प्रकाशित करती है बल्कि बैंक की विभिन्न गतिविधियों से भी रू-ब-रू कराती है। हमारे बैंक ने भारत सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में सदैव महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। बैंक में राजभाषा संबंधी विभिन्न निरीक्षण, संसदीय राजभाषा समिति के आगमन, बैंक सरोकार संबंधी समाचार तो पत्रिका के मुख्य आकर्षण है ही इसके अतिरिक्त पत्रिका के ज्ञानवर्धक लेखों व विभिन्न स्तंभों जैसे सोचिए, कार्टून कोना, काव्य मंजूषा तथा प्रादेशिक भाषा के समागम से पत्रिका में विविधता लाने का प्रयास किया गया है। इस अंक से हमने एक नया स्तंभ प्रारंभ किया है ''ग्राहक के मुख से'', जिसमें ग्राहक ने अपने मुख से अपने जीवन के लक्ष्य को प्राप्त करने में बैंक की भूमिका तथा उसके योगदान को उजागर किया है। इसे सफल बनाने में आपकी भागीदारी अत्यंत आवश्यक है। हमारी पत्रिका हिंदी भाषा के साथ क्षेत्रीय भाषाओं को भी पूर्ण महत्व देती है। प्रस्तुत अंक में प्रादेशिक भाषा की श्रृंखला में मराठी भाषा में (हिंदी रूप सहित) लेख प्रकाशित किया गया है, जो ज्ञानवर्धक होने के साथ-साथ रचनात्मक कौशलता का भी परिचय देता है। पत्रिका के बहुआयामी विकास के लिए आप सभी की सहभागिता अपेक्षित है।

आशा है "राजभाषा अंकुर" का यह अंक भी आपको पसंद आएगा। पत्रिका आपको कैसी लगी, कृपया हमें अपनी प्रतिक्रिया से अवश्य अवगत कराएं जिससे कि पत्रिका को और सुरुचिपूर्ण बनाया जा सके।

(दीन दयाल शर्मा)
महाप्रबंधक (राजभाषा)

योग करे निरोग

देवेन्द्र कुमार सेठी

योगासन मनुष्य के लिए अत्यंत उपयोगी है तथा शारीरिक, मानसिक एवं आत्मिक स्वास्थ्य के लिए एक सस्ता साधन है। स्वास्थ्य चाहने वाले प्रत्येक व्यक्ति को अपने दैनिक जीवन से कुछ समय निकाल कर योगासन अवश्य करना चाहिए। इससे शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य तथा संतुलन बड़ी आसानी से प्राप्त होते हैं।

आसन करने के लिए अपने श्वास का ध्यान रखना आवश्यक है। किस समय श्वास लेना है और किस समय श्वास छोड़ना है, महत्वपूर्ण है। योगासनों से, मासपेशियों की अपेक्षा, स्नायुबंध विशेष रूप से प्रभावित होते हैं। प्रत्येक आसन का प्रभाव रीढ़ तथा उदरस्थ अंगों पर होता है। आसन अस्वस्थ व्यक्ति के लिए जितना उपयोगी है, उतना ही स्वस्थ व्यक्ति के लिए भी आवश्यक है, क्योंकि आधुनिक युग की दौड़-धूप वाली जिंदगी में व्यक्ति उपयोगी एवं आवश्यक क्रियाओं का भी त्याग कर देता है, जिससे वह केवल अस्वस्थ ही नहीं होता बल्कि उसके जीवन विकास के मार्ग में भी बाधाएं आती हैं।

रोग के अनुसार आसन करके लाभ प्राप्त किया जा सकता है। जैसे शुगर रोगियों के लिए उदरासन, अर्ध-मत्स्यासन, योगमुद्रासन आदि। कुछ आसनों का विवरण दिया जा रहा है :

योगमुद्रासन :

योगमुद्रासन के लिए आप पदमासन या सुखासन में बैठें। दोनों हाथों को पीठ की ओर ले जाएं और उन्हें पकड़ लें, सिर को सीधा रख हाथों को खींचे तथा सांस भर लें, अब सांस छोड़ते हुए दाहिने एवं फिर बाएं सिर को झुकाएं। सिर को झुकाते समय मेरुदंड पर अधिक भार न डालें। यदि संभव हो तो ललाट का जमीन से स्पर्श करें एवं पेट की पूरी हवा निकाल दें। अब हाथों को खींचकर धीरे-धीरे उतना ऊपर ले जाएं, जितना ऊपर उठ जाएं ध्यान रहे अधिक भार न पड़ें।

भुजंगासन :

सीने के बल जमीन पर लेट जाएं। दोनों हाथों की हथेलियों को कंधों के नीचे जमीन पर रखें। माथा जमीन पर लगाकर रखें। धीरे-धीरे श्वास भरते हुए सिर और कंधों को जमीन से ऊपर उठाएं। हाथों पर अधिक दबाव न आए। इस स्थिति में 20-30 सेकंड तक रहें।

अभ्यास के साथ अंतराल बढ़ा सकते हैं। धीरे-धीरे श्वास छोड़ते हुए पूर्व स्थितिमें आएं एवं विश्राम करें।

महानता कभी न गिरने में नहीं बल्कि हर बार गिरकर उठ जाने में है।

सर्वांगासन :

सर्वांगासन पीठ के बल लेटें। दोनों पैरों को एक साथ मिला लें। दोनों हाथों को जमीन पर रखें शरीर ढीला छोड़ दें। सांस लेते हुए आराम से पैरों को बिना मोड़े ऊपर की तरफ उठाएं, जैसे-जैसे पैर उठाएं हाथों का सहारा लेकर धीरे-धीरे पैर और पीठ 90 डिग्री तक उठाने का प्रयास करें। मुख आकाश की ओर, अंगूठों की दिशा पेट की तरफ हो धीरे-धीरे पहले वाली अवस्था में आएं।

वज्रासन :

दोनों पैरों को मोड़कर पीछे ले जाएं तथा दोनों घुटनों को मिला दें। अपने पैरों के अंगूठे मिला दें। दोनों एड़ियों को ऊपर की ओर खुली हों जिस पर आप आसानी से बैठ जाएं।

आसनों से लाभ :

अपचन, गैस, कब्ज आदि में लाभदायक। घुटने में दर्द कमर दर्द, गठिया होने से बचाव, वजन/मोटापा कम रखने में सहायक। रीढ़ की गड़बड़ियों में सुधार होता है। मुख एवं मस्तिष्क के स्नायुओं को शक्ति प्रदान करता है तथा स्ट्रेस से मुक्ति मिलती है।

योगासनों से ही योग नहीं होता। आप अपनी दिनचर्या में थोड़ा बदलाव लाएंगे तो आप सुबह से रात तक योग कर सकते हैं। जैसे सुबह उठकर पानी पीएं, इससे शरीर के विषैले पदार्थ आसानी से बाहर निकल जाते हैं। बेड टी का त्याग करें। इसके बाद फ्रेश होकर सुबह सैर करें। सामर्थ्य अनुसार प्राणायाम करें। सप्ताह में एक बार तेल से शरीर की मालिश करें।

दोपहर - भोजन स्वस्थ रहने का एक अहम हिस्सा है। भोजन करने पर उसमें एक चौथाई हिस्सा खाली छोड़ना चाहिए, इससे भोजन पचने में मदद मिलती है। भोजन धीरे-धीरे खूब चबाकर खाएं एवं पानी कुछ समय बाद ही पीएं। ऑफिस में आजकल कंप्यूटर के बिना काम नहीं चलता। बीच-बीच में अपनी आंखों झपकाते रहें। एकटक देखकर काम न करें। इससे आंखों पर प्रभाव पड़ता है।

शाम को आप हल्का-फुल्का कुछ खाने को ले सकते हैं। अगर चाय पीते हैं तो इस वक्त एक कप चाय ली जा सकती है। समोसे और जंक फूड से बचना चाहिए। शाम को घर पर कुछ समय के लिए ध्यान करें और दिन की थकान, नेगेटिविटी और उलझनों को भुला दें।

रात में हल्का खाना खाएं तथा सोने के समय और खाने में कम से कम दो घंटे का अंतर होना चाहिए।

रात को जो भी काम रह गया हो उन सब को दिमाग से निकाल दें और सोने का प्रयास करें। किसी इंसान के लिए छह से सात घंटे की नींद पर्याप्त है। ऐसे में देर से सोने का मतलब है नींद की क्वालिटी के साथ समझौता।

बेहतर हेल्थ और जिंदगी के लिए योगासन और कुछ नियम अपनाएं एवं स्वस्थ रहें।

- प्रधान कार्यालय, सूचना प्रौद्योगिकी विभाग

मराठी लेख

छोट्या-छोट्या गोष्टीतून जीवनात बदल कसा कराल?

करुणा सक्सेना

आजकालचे जीवन दिवसेंदिवस संघर्षपूर्ण होत चालले आहे. या जीवनाला सोपे आणि आनंदपूर्ण बनवण्यासाठी खाली काही महत्त्वपूर्ण गोष्टी दिल्या गेल्या आहेत. त्यांच्या नियमित वापरामुळे जीवनात नक्कीच चांगले बदल होऊ शकतील.

1. स्वतःला ओळखा : दररोजच्या जीवनात आपण जे काही ऐकतो, करतो, त्यातून आपले जीवन समृद्ध होत राहते. विविध मार्गांतून जाताना आपल्याला स्वतःला काय करायचे आहे, याबद्दल आपण विचार करू शकतो. यासाठी अंतर्मुख होऊन आत्मचिंतन करा.

2. नम्रपणे वागा : 'विद्या विनयेन शोभते' नम्रता म्हणजे लाचारी नव्हे. ती स्वाभिमानाचा एक आविष्कार आहे. ज्या व्यक्ती नम्र असतात, त्यांनी जीवनात चांगले यश मिळवलेले असते.

3. स्वतःला चांगल्या विचारांमध्ये बदला : स्वतःला चांगल्या विचारांमध्ये बदलणे व त्यांची अंमलबजावणी करणे हे स्वतःवर प्रेम करण्यासारखेच आहे. जोपर्यंत तुम्ही स्वतःवर प्रेम करत नाही, तोपर्यंत तुम्ही दुसऱ्यांवर प्रेम करू शकत नाही.

4. समस्यांची यादी करा : 'समस्या व्यवस्थितपणे मांडणे म्हणजे ती समस्या निम्मी सोडवल्यासारखे असते.' मनस्ताप देणाऱ्या व मानसिक तणाव वाढविणाऱ्या ज्या समस्या असतात, त्या कागदावर स्पष्ट अक्षरात लिहून काढा. तुमच्या मनात तुमच्या समस्येचे चित्र अगदी स्पष्ट होते. ज्याप्रमाणे आपले दुःख दुसऱ्याला सांगितले की मन हलके होते, त्याचप्रमाणे समस्या लिहून काढल्याने त्याचा ताण कमी होतो. समस्या नेहमी प्रकाशित ठेवाव्यात तरच त्यावर तोडगा सापडू शकतो.

5. निःस्वार्थी सेवा करा : सेवा हाच धर्म सर्वश्रेष्ठ आहे. मी इतरांची सेवा किती चांगल्याप्रकारे करू शकेन, असा प्रश्न स्वतःला अधूनमधून विचारावा. ज्या कामात स्वार्थ दडलेला असतो, त्याला सेवा म्हणता येत नाही. निःस्वार्थीपणे केलेल्या सेवेचे मूल्य अमोल असते त्याचे मोजमापही करता येत नाही.

6. चालावे कसे, हे शिका : जीवनात चालण्याला फार महत्त्व आहे. जो चालतो, त्याचे भाग्यही चालते असे म्हणतात. उत्तम आरोग्यासाठी प्रत्येकाने रोज अर्धा तास तरी चालले पाहिजे. चालताना मध्यमगतीने चालावे. चालताना दीर्घश्वसन करावे. कोणाशीही बोलू नये.

7. शांत राहण्यास शिका : एखादी व्यक्ती तावातावाने भांडू लागला तर त्याला तितक्याच शांतपणे उत्तर दिले, तर त्याचा निम्मा राग कमी होतो. शब्दाने शब्द वाढतात. शांत राहण्याची सवय करून घ्यावी लागेल. त्यासाठी तुम्ही दररोज ठराविक वेळ शांत राहण्याची सवय करून घ्यावी लागते. राग आला तरी, चेहऱ्यावर तसे दाखवू नये. ही देखील एक अवघड कला आहे.

8. दैनंदिन आचारसंहिता : आचारसंहिता ही एक प्रकारची वेसण असते. त्यासाठी दिवसाच्या 24 तासांचे योग्य प्रकारे नियोजन केले पाहिजे. 1) लवकर उठणे, लवकर झोपणे 2) नियमित व्यायाम करणे 3) समतोल आहार 4) इतरांना दिलेल्या वेळा पाळणे 5) रात्रि 10 च्या पुढे प्रवास न करणे 6) पहाटे फिरायला जाणे 7) विनाकारण जागरण न करणे.

9. शांतपूर्वक ध्यान करा : शांत वातावरणाच्या ठिकाणी जाऊन वेळ घालवा, मग ती एखादी बाग असो किंवा आपल्या घरचा निर्जन कोपरा असो. दिवसभरातून एकदातरी शांतपूर्ण मनन-चिंतन, ध्यान धारणा करण्याचा प्रयत्न करा.

10. दिवसाची सुरुवात चांगली करा: तुम्ही झोपेतून उठल्यानंतर पहिल्या 30 मिनिटांचा जो कालावधी असतो

त्याला 'प्लॅटिनम घटी' असे नाव आहे. ही 30 मिनिटे तुमच्या दिवसातील अत्यंत महत्त्वाची असतात. आणि या प्रत्येक मिनिटाचा तुमच्या गुणवत्तेवर प्रभाव पडत असतो. कारण या काळात तुम्ही केवळ शुद्ध विचार करत असता. झोपेतून उठल्यानंतरचा हा अर्धा तासाचा जो वेळ असतो, तो निखळ मनाचे प्रतिक असतो. या सकाळच्या 30 मिनिटांच्या काळामध्ये 10 मिनिटे एकचित्ताने मौन पाळले की मन प्रसन्न राहते आणि कामाचा उत्साह राहतो.

11. डोके थंड ठेवा : रागावणे अतिशय सोपे असते. परंतु, योग्य माणसांवर, योग्य प्रमाणात, योग्य वेळेला, योग्य कारणासाठी आणि योग्य पद्धतीने रागावणे सोपे नसते. रागाच्या एका क्षणात वर्षानुवर्षे जपलेली मैत्री संपुष्टात येते. शब्द हे शस्त्रापेक्षा धारदार असतात. शस्त्राने झालेल्या जखमा भरून येतात, परंतु शब्दाने झालेल्या जखमा कधीही भरून येत नाहीत. शब्द म्हणजे बाण असतो. सुटलेला बाण आणि बोललेला शब्द परत घेता येत नाही. म्हणून शब्द अतिशय जपून वापरावे लागतात. रागावर नियंत्रण ठेवण्याचा सर्वात सोपा मार्ग म्हणजे 1 ते 100 अंक मनात म्हणावेत.

12. मुलांना चांगले संस्कार द्या : मुलांबरोबर वेळ घालवणे ही आजच्या काळाची गरज आहे. त्यांना चांगले संस्कार द्या. आजची मुलं ही येणाऱ्या काळाची गरज आहे, हे समजून घ्या. त्यांच्यावर लक्ष द्या. म्हणजे जेणेकरून भविष्यात आपल्याला पश्चाताप होऊ नये.

13. मित्रांना ओळखायला शिका : जो मित्र आपल्या चुका दाखवतो, जो आपल्याला वेळेवर समजावतो, आपण केलेली चूक सुधारण्याचा प्रयत्न करतो, तोच आपला खरा मित्र असतो. त्यामुळे विश्वासघात करणाऱ्या, आपल्याला फसवणाऱ्या मित्रांपासून सावध रहा. आपल्याशी चांगले वागून, आपल्याला विश्वासात घेऊन आपले मित्र आपल्याला धोका देणार नाही ना याची काळजी घ्या.

14. नकार द्यायला शिका : दुसऱ्यांना दुःख होऊ नये म्हणून आपण त्यांच्या होकारात होकार देत असतो. पण जी गोष्ट आपल्याला योग्य वाटत नाही, पटत नाही त्या गोष्टीला नकार द्यायला शिका.

15. तुम्ही चुकांमधून काय शिकतात : जीवनात आपण केलेल्या चुकांमधून कोणीना काही शिकत असतो. लोकांकडून नेहमी नवनवीन माहिती घ्या. दुसऱ्यांना प्रश्न विचारायला संकोच करू नका. जे जीवनात प्रश्न विचारत नाहीत ते जीवनात पुढे सफल होऊ शकत नाहीत.

16. आदराने वागा : सगळ्यांशी आदराने वागा. चांगल्या बोलण्याने तुम्ही जग बदलू शकता. आपले ध्येय निश्चित करा. कधी सत्यापासून विचलित होऊ नका. दिवसातून एखाद्यातरी व्यक्तीला हसवू शकलात तर तो दिवस आपण पूर्णपणे जगलो असे समजा. याचा फळ आपल्याला नक्कीच मिळेल.

17. भूतकाळापासून शिका : आपल्या भूतकाळाला कधी विसरू नका. आजचा वर्तमान काळ हा उद्याचा भूतकाळ असतो. यातून तुम्ही कोणीना काही शिकून पुढे जाऊ शकता. भूतकाळातून शिकून जो वर्तमानकाळात जगतो, त्याच भविष्य चांगलं होतं आणि तो भविष्यात आपल्या ध्येयापर्यंत पोहचू शकतो.

18. जीवनात चांगल्या मित्रांचा सहभाग : जीवनात 3 तरी चांगले मित्र नक्की बनवा. जे आपल्या सुख-दुःखात आपल्या बरोबर निःस्वार्थपणे उभे राहू शकतील आणि या मैत्रीला कायम टिकवून ठेवण्यासाठी तुम्हीसुद्धा त्यांना निःस्वार्थपणे साथ द्या.

19. मनन-चिंतन करा : दिवसभर आपले मन कुठल्या ना कुठल्या विचारात गुंतलेले असते. त्यासाठी संध्याकाळी एका ठिकाणी बसून मनन-चिंतन करा. ध्यान केल्याने तुम्ही सर्व अडचणींवर उपाय मिळवू शकता. तुमची दुःख सहन करण्याची शक्ती वाढू शकते. तुम्ही यशस्वी जीवन जगू शकता.

20. थकवा घालवण्यासाठी झोप घ्या : दिवसभराचा थकवा घालवण्यासाठी शांत झोप आवश्यक आहे. तुम्ही व्यायाम, ध्यान-धारणा, मनन-चिंतन केले नाहीतर तुमचे चंचल मन भटकत राहते. रोज रात्री कमीत कमी 8 तास शांत झोप घेणे आवश्यक आहे. जर तुम्ही ह्यासाठी वेळ काढला नाही तर तुम्हाला आजारपणासाठी वेळ काढावा लागेल.

वरील गोष्टींमुळे जीवनात नक्कीच चांगला परिणाम पडू शकेल.

मुख्य प्रबंधक, शाखा सायन कोळीवाडा, मुंबई

मराठी लेख का हिंदी रूप

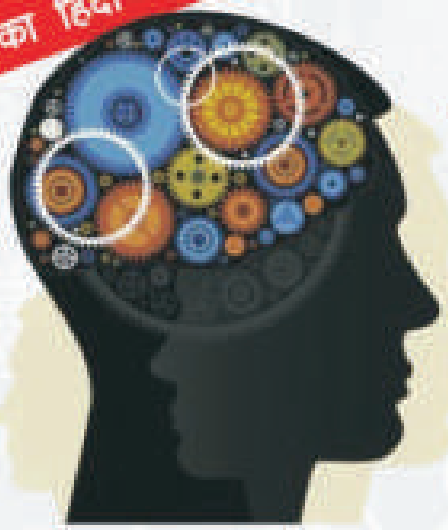

छोटी-छोटी बातों से कैसे लाएं जीवन में बदलाव

करुणा सक्सेना

आज का जीवन दिन-ब-दिन संघर्षपूर्ण होता जा रहा है। इस जीवन को सहज और आनंदपूर्ण बनाने के लिए नीचे कुछ महत्वपूर्ण बातें दी जा रही हैं जिन्हें आचरण में लाने से यकीनन जीवन में अच्छे बदलाव आएंगे :

1. खुद की पहचान रोजमर्रा के जीवन में हम जो सुनते हैं, करते हैं, उसी से हमारा जीवन समृद्ध होता जाता है। अतः इस मार्ग पर चलते हुए खुद को क्या करना आवश्यक है, इस पर गौर करें।

2. नम्र रहें : 'विद्या विनयेन शोभते' नम्र होने का अर्थ लाचार होना नहीं है। यह तो स्वाभिमान का विस्तृत रूप है। जो व्यक्ति झुकना जानता है, वह भविष्य में सदा यश प्राप्त करता है।

3. स्वयं को अच्छे विचारों में डालना : स्वयं को अच्छे विचारों में डालना एवं उन पर अमल करना खुद से ही प्यार करना है। जब तक आप खुद से प्यार नहीं करेंगे, तब तक यह मुमकिन नहीं है कि आप दूसरों को प्यार कर सकें।

4. समस्याओं पर विचार करना : अपनी समस्याओं पर ठीक तरह से विचार करना भी आधी समस्याओं से निजात पाना है। जो आपकी तकलीफें हैं, उन्हें एक कागज पर उतार लें। जिस तरह से अपनी समस्याएं किसी को बताने के बाद हम अपने आप को हल्का महसूस करते हैं, उसी तरह आप अपनी समस्याओं को लिखने के बाद भी महसूस करेंगे।

5. निःस्वार्थ होकर काम करें : निःस्वार्थ भाव से किए गए काम अमूल्य होते हैं। इनसे मन को शांति मिलती है। अपने कार्य स्थल पर चुस्त-दुरुस्त रहें। अपने कार्य से प्यार करें।

6. पैदल चलना : रोज कम से कम आधा घंटा पैदल चलने का प्रयास करें, क्योंकि जो चलता है, उसका भाग्य भी उसके साथ चलता है। चलते समय धीमी गति से चलें, दीर्घश्वास लें एवं बात न करें।

7. शांत रहना सीखें : चाहे कितनी भी प्रतिकूल अवस्था हो, शांत रहना सीखें। समस्याएं आने पर घबराएं नहीं। हर रोज कुछ न कुछ अच्छा पढ़ने के लिए वक्त निकालें। पढ़ने से मन निर्मल और शांत हो जाता है। हर समय अपने आपको अच्छे कामों में व्यस्त रखें। गुस्सा आने पर भी शांत चित्त रहना, यह भी एक कठिन कला है।

8. समय के अनुसार चलें : आपका वक्त आपकी अमूल्य निधि है। इसे बर्बाद न करें और न ही किसी और को इसे बर्बाद करने दें।

दैनंदिन आचार संहिता : रोजमर्रा की आचार संहिता का आचरण करने के लिए 24 घंटों को इस प्रकार नियोजित करना चाहिए : 1) जल्दी उठें, 2) जल्दी सोएं 3) नियमित व्यायाम करें 4) समतोल आहार लें 5) दूसरों को दिए गए समय का पालन करें 6) रात को 10 बजे के पश्चात सफर न करें 7) सुबह-सुबह खुली हवा में घूमने जाने का अभ्यास करें तथा 8) रात में बेवजह न जागें।

9. शांतिपूर्ण ध्यान : शांतिपूर्ण जगह, चाहे हिल स्टेशन हो, बगीचा हो या फिर आपके घर का एकांत कोना।

ब्रह्माण्ड में तीन चीजें हैं जिन्हें नष्ट नहीं किया जा सकता, आत्मा, जागरूकता और प्रेम।

दिन में कम से कम एक बार शांतिपूर्ण मनन-चिंतन, ध्यान धारण करने का प्रयास करें।

10. प्लेटिनम 30 : दिन की शुरुआत से पहले 30 मिनट को 'प्लेटिनम 30' कहते हैं। इन 30 मिनटों का प्रभाव हमारी गुणवत्ता पर पड़ता है। इन 30 मिनटों में 10 मिनट मौन रहें, इससे मन प्रसन्न होता है और काम करने में उत्साह होता है। इस समय हमारे विचार शुद्ध होते हैं, इस समय का सदुपयोग करें।

11. गुस्से पर नियंत्रण : अपने गुस्से पर नियंत्रण रखें। शब्द अस्त्र का रूप ग्रहण करे इससे पहले गुस्सा निगल लें। गुस्से में कोई फैसला न लें और बहुत खुशी में कोई वादा न करें। गुस्से के कारण काफी सालों से चली आ रही हमारी दोस्ती-रिश्ते भी खत्म हो जाते हैं। अतः गुस्सा आने पर 1 से 100 अंक मन में याद करें, इससे गुस्से को शांत करने में आसानी होगी।

12. बच्चों को अच्छे संस्कार दें : बच्चों को अपना समय दें उन्हें अच्छे संस्कार दें। समय रहते उन पर पूरा ध्यान दें नहीं तो वक्त बीत जाने के बाद केवल दुख ही मिलेगा।

13. मित्र की पहचान करना : विश्वास तोड़ने वाले मित्र से ज्यादा अच्छा दिलदार मित्र होता है। वह कम से कम आपकी गलतियाँ तो बता देता है। पीठ में चाकू तो नहीं घोंपता।

14. 'न' कहने की कला : सामने वाले व्यक्ति को बुरा न लगे, इसलिए कुछ लोग कई बार उनकी 'हाँ' में 'हाँ' मिला देते हैं। जो बात आपको सही नहीं लगती उसे 'न' कहना सीखें।

15. गलतियों से आपने क्या सीखा : आप अपनी ही गलतियों से कुछ न कुछ सीखते हैं और दोबारा वे गलतियाँ नहीं करते। हमेशा नई जानकारियां लें, लोगों से पूछें। जो कभी प्रश्न नहीं पूछते वे जीवन में आगे नहीं बढ़ सकते।

16. आदरपूर्ण व्यवहार : सभी से आदरपूर्ण व्यवहार करें। प्यार के दो बोल दुनिया बदल सकते हैं। अपना ध्येय सुनिश्चित करें। सत्य को कभी न छोड़ें। दिन में केवल एक व्यक्ति के चेहरे पर भी यदि मुस्कुराहट लाने में कामयाब हो जाते हैं तो उस दिन को आपने पूर्णता से जीया है। इसका फल आपको अवश्य मिलेगा।

17. बीते कल से सीखें : अपने भूतकाल में कभी न भूलें। आज का वर्तमान कल का भूतकाल होगा। इससे आप कुछ न कुछ सीख के आगे बढ़ते हैं। भूतकाल से सीखकर जो वर्तमान में जीता है, उसका भविष्य अच्छा होता है और वह भविष्य में अपने ध्येय पर पहुँच ही जाता है।

18. जीवन के अच्छे मित्र : जीवन में 3 अच्छे मित्र बनाएं, जो आपके सुख-दुख में निस्वार्थ भाव से आपके साथ रहें। इस मित्रता को कायम रखने के लिए खुद भी निस्वार्थ रहकर उसका साथ दें।

19. दिनभर मन न जाने कहाँ-कहाँ भटकता रहता है। सायंकाल एक जगह बैठकर चिंतन-मनन करें। ध्यान लगाकर बैठने से सभी समस्याओं के हल मिलने लगते हैं। दुख सहने की शक्ति बढ़ जाती है। आप निर्विकार बन जाते हैं।

20. थकान मिटाने हेतु निद्रा : दिनभर की थकान मिटाने हेतु शांत निद्रा भी आवश्यक है। यदि आप व्यायाम, ध्यान-धारणा, मनन चिंतन नहीं करेंगे तो आपका चंचल मन भटकता ही है। रोज कम से कम 8 घंटे शांत निद्रा लेना आवश्यक है। यदि आपने इनके लिए समय नहीं निकाला तो बीमारियों के लिए आपको समय निकालना पड़ेगा।

उक्त उपायों से निश्चय ही जीवन पर अनुकूल प्रभाव पड़ेगा।

- शारदा कोलीवाड़ा, मुंबई

एक-एक अक्षर

हमें इन पर गर्व है

ईमानदार कर्मचारी

बात, पंजाब एण्ड सिंध बैंक आंचलिक कार्यालय पटियाला अंचल की ऑफिसर कालोनी शाखा में कार्यरत एक नियमित सेवारत कर्मचारी अमन कुमार (ए13580) जी से संबंधित एक छोटी सी घटना की है। यह घटना दिनांक 16.11.2015 की है जब उक्त शाखा में श्री कुलवंत सिंह (सेवानिवृत्त कर्नल) नाम के एक ग्राहक महोदय अपने लॉकर संबंधी कार्य हेतु शाखा में आए हुए थे। शाखा प्रबंधक से मिलने के बाद वह लॉकर रूम में लॉकर संचालन के लिए रूम में चले गए। लॉकर कमरे में उस दौरान उनकी जेब से दो हजार डॉलर की राशि लॉकर रूम में ही गिर गई और ग्राहक महोदय इस बात से बिल्कुल अनजान थे। अतः वह अपने लॉकर संचालन की प्रक्रिया पूरी करके घर वापस चले गए। घर जाकर वहां उन्होंने अपनी जेब को टटोला और पाया कि उनके दो हजार डॉलर कहीं गिर गए हैं। अब वह अपने दिनभर के क्रियाकलापों के बारे में सोचने लगे कि आज उनका कहां-कहां जाना हुआ, क्या-क्या किया तथा इधर-उधर फोन भी किए। आखिर पैसे कहां गिर सकते हैं इन सब बातों में उनका मन उलझा हुआ था।

उधर उक्त शाखा के बंद होने के समय वहां कार्यरत एक पी.टी.एस. कर्मचारी अमन कुमार लॉकर वाले कमरे को बंद करने के लिए गए और वहां उन्होंने एक लिफाफे में दो हजार डॉलर की राशि पाई, अब क्या था ऐसी स्थिति में कोई भी व्यक्ति सकारात्मक व नकारात्मक सोच में पड़ सकता है कि इतनी राशि का वह क्या करें? क्या न करें? कई विचार उनके मन में आए परंतु अमन कुमार ने इस स्थिति में ईमानदारी का परिचय दिया और उन्होंने वह लिफाफा अपने शाखा

प्रबंधक को पकड़ा दिया इस पर शाखा प्रबंधक ने लिफाफे को खोलकर दो हजार डॉलर की राशि देखकर उन्हें अचानक कुलवंत सिंह के फोन की याद आ गई जिस विषय में कुलवंत जी परेशान थे।

अतः शाखा प्रबंधक जी ने तुरंत कुलवंत सिंह को फोन करके सब कुछ बता दिया और इस पर कुलवंत सिंह जी ने अमन कुमार को उसकी ईमानदारी से प्रभावित होकर प्रशंसा पत्र दिया और साथ ही साथ हमारे बैंक की भी तारीफ की और कहा कि ऐसे कर्मचारी ही बैंक का अभिन्न अंग है। इस प्रकार कुलवंत सिंह जी ने शाखा प्रबंधक और अमन को धन्यवाद दिया। उक्त घटना यह दर्शाती है कि हम अगर ईमानदारी से कार्य करते रहें तो केवल हमको ही नहीं बल्कि हमारी संस्था/विभाग/कार्यालय/ को भी सम्मान मिलता है।

आज अमन कुमार अपने स्टाफ सदस्यों में बहुत आदरणीय व विश्वसनीय कर्मचारी है। हमें इन पर गर्व है।

12.10.2015 को शाखा आधारशिला विद्यापीठ, पीतमपुरा के ग्राहक श्री जी. आर. शर्मा अपना लॉकर बंद करके वह लॉकर रूम से बाहर आए लेकिन गलती से कुछ कीमती चीजें वह लॉकर में रखना भूल गए थे और वह बाहर ही रह गई थी। उनके जाने के तुरंत बाद श्री रूपेश कुमार लॉकर रूम से स्टेशनरी लेने गए तब उन्होंने वह चीजें देखीं और श्री शर्मा जी को जो तब शाखा में ही उपस्थित थे, लौटा दी। इस बात के लिए श्री शर्मा जी ने रूपेश को प्रशंसा पत्र भी दिया। श्री रूपेश का इस प्रकार का रवैया सचमुच प्रशंसनीय है।

जीवन लम्बा होने की बजाये महान होना चाहिए।

विमोचन

पी एण्ड एस बैंक राजभाषा अंकुर के मार्च 2016 के अंक का विमोचन संसदीय राजभाषा समिति के उपाध्यक्ष माननीय श्री. सत्यनारायण जटिया एवं संयोजक माननीय श्री हुकमदेव नारायण यादव के कर कमलों द्वारा संपन्न हुआ। इस अवसर पर समिति के अन्य सदस्य तथा बैंक के अधिकारियों के साथ वित्त मंत्रालय, वित्तीय सेवाएं विभाग के संयुक्त निदेशक डॉ. वेद प्रकाश दुबे भी दृष्टव्य हैं।

विशेष उपलब्धि

दिनांक 23-24 जून 2016 को कृषि बैंकिंग महाविद्यालय, भारतीय रिज़र्व बैंक, पुणे द्वारा प्रशिक्षण समन्वय समिति की 100वीं बैठक आयोजित की गयी। इस अवसर पर प्रशिक्षण कॉलेजों में हिंदी को सर्वाधिक बढ़ावा देने वाले संकाय सदस्यों को पुरस्कृत किया गया।

बैठक में हमारे प्रशिक्षण कॉलेज के संकाय सदस्य प्रबंधक श्री नवीन चंद डाबड़ा को प्रमाण-पत्र तथा ट्रॉफी प्रदान की गई। चित्र में बाएं से दाएं - कृषि बैंकिंग महाविद्यालय के प्रधानाचार्य व समिति अध्यक्ष श्री प्रमोद कुमार पंडा पुरस्कार प्रदान करते हुए, उनके साथ प्रधानाचार्य, सी.बी.आर.टी. चंडीगढ़ श्री एन. पी. सिंह तथा श्री नवीन चंद डाबड़ा पुरस्कार प्राप्त करते हुए और उनके साथ हैं श्री अरविंद रंगारी, समिति के सदस्य सचिव।

चरैवति

वी. एस. मिश्र

महत्वाकांक्षा इंसान की धरोहर है चाहे तुष्ट हो या अप्राप्य। यही तो है जो प्राणी के अंदर जिजीविषा पैदा करता है उसे सजग रखता है। तभी तो किसी ने कहा है कि मन के हारे हार है मन के जीते जीत। लेकिन यही महत्वाकांक्षा जब मस्तक पर बोझ की तरह प्रतीत होती है तो मनुष्य इसका बोझ वहन करते-करते शैथिल्य की उस सीमा पर पहुंच जाता है जहाँ से वापसी की कोई आशा नहीं रहती। फिर एक स्वप्न में आया कोई दृश्य होता है निरंतर खींचता हुआ, लुभाता हुआ।

बाल्यकाल से ही उसने सबको यही कहते पाया था कि यह बालक विलक्षण प्रतिभा का है। इसकी प्रतिभा तो अंधकार में भी प्रकाश उत्पन्न कर देती है। पिता, माता, अन्य परिवारजन, मित्र सबके लिए वह विलक्षण था और इतनी सारी आकांक्षा कब उसकी महत्वकांक्षा में बदल गयी उसे स्वयं पता नहीं चला। बाल्यकाल बीता और शैक्षणिक उपलब्धियों के उपरांत उसके सामने विकट समस्या थी अपनी विलक्षणता को जगत में प्रतिष्ठित करने की। कभी वह राजनेता बनने की चाहत करता, कभी मूर्धन्य शिक्षक तो कभी उच्च प्रशासनिक अधिकारी, तो कभी-कभी उसके मन में वह अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार भी कौंध जाते थे जिसे नोबेल, मैग्सेसे बताया जाता। कुल मिलाकर मतिभ्रम वाली स्थिति थी। बाल्यकाल उजड़ चुका था। सामने रोटी-दाल की समस्या थी। इस अवस्था में जीवन में कुछ बन पाने से अधिक कुछ मिल पाने की उत्कण्ठा अधिक प्रभावशाली हो जाती है। ऐसा लगता था कि सारी महत्वाकांक्षा तिरोहित होकर किसी प्रकार अपने जीवनयापन के लिए ठौर-ठिकाने की तफ्तीश में तब्दील हो गई थी। आह! ये मानव मस्तिष्क चाहे जितना प्रचण्ड हो, पेट के आकार से तो छोटा ही होता है। परिणामस्वरूप वह भी उसी गलाकाट प्रतियोगिता में सम्मिलित होने लगा जो उसे जमीन प्रदान कर सके। ज़हीन तो था ही बड़ी आसानी से एक अर्ध-शासकीय सेवा में भर्ती हो गया। कुछ वर्ष तो ऐसे ही व्यतीत हो गए लेकिन कार्यालय स्तर पर भी उसकी प्रतिभा के कायल लोगों की कमी नहीं थी। उसकी कार्यशैली का ज्ञान एवं चीजों को आत्मसात कर लेने की क्षमता का स्वार्थवश ही सही पर सभी आदर करते थे और यहीं से जन्म हुआ है उसके मन में उड़ान भरने की दूसरी किश्त का। जो भी उसके संपर्क में आता उसकी प्रतिभा का लोहा मानता और उससे उसके मन ने निर्विवाद मान लिया कि वह सामान्य नहीं है इसलिए सामान्य-सी भूमिका उसके लिए नहीं लेकिन कहते हैं न 'मेरो मन अनत कहाँ सुख पावे जैसे उड़ी जहाज को पंछी, पुनि जहाज पे आवे'। मन महत्वाकांक्षा के समंदर में गोते लगाकर वापस जीवन यापन की देहरी पर ढेर हो जाता था मगर भरता नहीं था। ऐसे ही झंझावतों से गुजरने के बाद एक दिन उसने निर्णय लिया सांसारिक जंजाल से सुदूर जाकर मन की वेदना का परीक्षण और इलाज करने का। सच है, संतोष और इच्छाओं में विलोम संबंध है। अपने प्रकार को सिद्ध कर लेने और ऊंची सामाजिक स्थिति प्राप्त करने की उत्कण्ठा ने उसे भी जमी-जमाई नौकरी से हटाकर अनजाने भविष्य की ओर प्रयाण के लिए विवश कर दिया। तिस पर आकाश छूने की चाह में वह निकल पड़ा उस ओर जो निराकार था पर आकर्षक था। कुछ समय भटकने के पश्चात् वह एक शहर में अनायास रुक गया और उसने देखा कि छोटी-छोटी झोपड़ियों में रहने वाले बच्चे किस प्रकार भटककर अपना बचपन और भविष्य नष्ट कर रहे हैं। भाव ने करवट लिया, सोयी हुई विद्या ने दस्तक दी और मन के सूनेपन ने उसका आह्वान किया। वह उन बच्चों के साथ सम्मिलित हो गया। उनके साथ खेलना, उन्हें पढ़ाना- लिखाना, स्वरूप सुसंगत बनाना और अंत में उन बच्चों के भविष्य की रूपरेखा तैयार करना, यही उसका शगल और प्रति उपकार में उसे जीवनयापन हेतु भोजन और जैसे-तैसे रहने की जगह भी मिल गई। वह खुश था क्योंकि किसी दफ्तर में कलम घिस्सू की जगह वह कुछ कर रहा था और आत्मतुष्टि में भी इतनी

ऊर्जा थी कि उसकी कई जरूरतें भस्मसात हो गई।

बहुत साल व्यतीत हो गया। झोपड़ी की जगह सरकार ने पक्के मकान बनवा दिए और उसके निष्काम सेवा के बदले आसपास के गरीबों की सिफारिश पर उसे एक छोटा सा मकान मिल गया था लेकिन उपलब्धियों के तुलन पत्र में ज्यादातर उसकी असफलताएं ही दर्ज थीं। फिर भी वह आत्मतुष्ट रहता था या रहने का ढोंग करता। आज सुबह आई चिट्ठियों में से एक थोड़ी अलग थी। एक चिट्ठी किसी राजनेता की थी, उत्सुकतावश वही चिट्ठी उसने खोली और पत्र में यह लिखा था कि आपकी निष्काम सेवा और बौद्धिक व्रत को सरकार मान देते हुए आपको विश्वविद्यालय का कुलपति बनाया जाता है तथा यह अपेक्षा की जाती है कि अपने सीमित साधनों में जिस प्रकार संकल्प के माध्यम से निर्धन लोगों के मध्य शिक्षादान किया है उसे स्मरण रखते हुए अपने अधिकार संपन्नता से विद्यार्थियों के लिए नवयुग का मार्ग प्रशस्त करेंगे। नीचे शुभेच्छु में उसी के किसी पुराने छात्र का नाम था जिसने उसकी प्रदान की हुई प्रतिभा से शिक्षा सचिव का पद प्राप्त कर लिया था।

उसकी आँखें भर गई क्योंकि जिस प्रतिभा के मूल्यांकन से बाल्याकाल से ही वह विशिष्ट हुआ करता था, उसे आज पूर्ण पहचान प्रदान की जा रही थी। मगर महत्वाकांक्षाओं का विलाप पदा-प्राप्ति से कब तुष्ट हुई है और उसने झटपट उस पत्र का जवाब लिखा कि माननीय शिक्षा सचिव महोदय के प्रस्ताव को कृतज्ञतापूर्वक वापस करते हुए मैं यह बताना चाहूंगा कि बाल्यकाल से मुझे विलक्षण कहा गया। इस विलक्षण प्रतिभा का प्रतिफल एक आप भी हैं। मैं किसी संगठन के साथ बंधकर अपनी महत्वकांक्षाओं का मर्दन नहीं कर सकता। असीम व्योम में उड़ने वाले खग, पिंजरे में सुख नहीं पाते। मुझे कई घोंसले बनाने हैं और कई प्रतिभाओं को संवारना है जो शायद उस विश्वविद्यालय की दहलीज पर भी न पहुंच पाएं, जिसका मुझे कर्णधार बनाया जा रहा है। कृपया मेरी उड़ान को न सीमित न करें।

आज इतना लिखने ही उसका मन रुई की तरह हल्का हो गया और ऐसा लग रहा था कि जिस महत्वाकांक्षा की पूर्ति की तलाश में अपने उद्देश्यों को वह समझ नहीं पा रहा था आज उसके सामने साकार खड़ा है। यह समाज का है सबका है और यही समझ उसकी विलक्षण प्रतिभा का पर्याय है। यह जो सबका बन जाने में हर्ष है वह किसी भी पद से अनुपम है। शायद वहीं उसका शैथिल्य था या महत्वाकांक्षा। मगर एक बात तो तय है कि इंसान को खुशी पाने से अधिक देने में होती है।

- आंचलिक कार्यालय, भोपाल

कार्टून कोना

जिस व्यक्ति ने कभी गलती नहीं की उसने कभी कुछ नया करने की कोशिश नहीं की।

बदलते बैंकिंग स्वरूप में भाषा की भूमिका

रविन्द्र परमार

भारतीय बैंकिंग प्रणाली सन् 1770 से विकासशील हुई। जब देश के प्रमुख नगर कलकत्ता में "बैंक ऑफ हिंदुस्तान" की स्थापना हुई और बाद में इस प्रणाली के कई अवतार जैसे - जनरल बैंक ऑफ इंडिया, बैंक ऑफ कलकत्ता, बैंक ऑफ बाम्बे, बैंक ऑफ मद्रास, जो 1921 में विलय होकर 'इंपीरियल बैंक ऑफ इंडिया' जिसे 1955 में "स्टेट बैंक ऑफ इंडिया" के रूप में स्थापित किया गया। भारतीय बैंकिंग प्रणाली में एक और बदलाव 1969 में हुआ जब सभी प्रमुख बैंकों को राष्ट्रीयकृत किया गया। स्वरूप बदलाव के तीसरे चरण के रूप में 1991 के पश्चात् की आर्थिक उदारता है जिसने भारतीय बैंकों को प्रतिस्पर्धा एवं ग्राहकों को उत्तम सेवाएं प्रदान करने की ओर अग्रसर किया। बैंकों ने अपने परिचालन में परिवर्तन कर वैश्विक बैंकिंग की ओर उन्नत तकनीक के प्रयोग, प्रणाली आधारित वैकल्पिक सेवाएं जैसे - स्मार्ट कार्ड, स्वचालित गणक यंत्र, इंटरनेट का प्रयोग, मोबाइल व सामाजिक बैंकिंग के साथ अग्रसर हुए। बैंकों के परिवेश में नित नए परिवर्तन हो रहे हैं, परंतु इन सभी प्रयासों को लाभ में तभी परिवर्तित किया जा सकता है जब बैंकों द्वारा अपने ग्राहकों से उनकी अपनी भाषा में संवाद व संपर्क किया जाए।

भाषा किसी मानव की अभिव्यक्ति का माध्यम है। भारत भूमि विविधताओं से भरी हुई है, जिसमें कई भाषाएं एवं बोलियां बोली जाती हैं जिनमें हिंदी बहुतायत में बोली जाती है और जिसे भारत की राजभाषा का दर्जा प्राप्त है। बैंकिंग व्यवसाय में सेवाओं को प्रदान करने के क्रम में ग्राहकों से व्यवहार किया जाता है और व्यवहार की इस कड़ी में यदि ग्राहकों से सेवा व्यवहार उनकी बोलचाल की भाषा में किया जाए, तो विचारों का आदान-प्रदान भी सही रूप में होता है जिसके परिणामस्वरूप ग्राहकों से विचारों, शिकायतों एवं सुझावों का सही व पूर्ण रूप में स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त होते हैं।

अगर हम उस समय की कल्पना करें, जब हम किसी व्यक्ति को कुछ कहते हैं और वह उसे पूरी तरह से समझ नहीं पाता है और परिणामस्वरूप प्रतिक्रिया जो उसे करनी चाहिए थी या नहीं करनी चाहिए थी, उसे कर देता है या नहीं करता है तो आपसी विवाद उत्पन्न होने की संभावना बढ़ जाती है जो कि व्यवसाय व मानव व्यवहार दोनों के लिए उचित नहीं होगा।

बैंक मौद्रिक सेवाएं देते हुए व्यवसाय करते हैं और यह व्यवसाय आपसी साख व विश्वास पर कायम है। वर्तमान बैंकिंग व्यवसाय में उन्नति के साथ-साथ बैंकों के मध्य प्रतिस्पर्धा में भी वृद्धि हुई है। बैंकों ने अपने व्यवसाय की वृद्धि के क्रम में सेवाओं के प्रकार व सेवाओं की सुपुर्दगी करने के तरीके में आधुनिक तकनीकी एवं स्वचालित यंत्रों

ज्ञानी व्यक्ति ज्ञान और कर्म को एक रूप में देखता है, वही सही मायने में देखता है।

का प्रयोग किया जा रहा है ताकि उन्नत ग्राहक सेवा के लक्ष्य को प्राप्त करते हुए व्यवसाय में उत्तरोत्तर वृद्धि की जा सके। ग्राहक संख्या में वृद्धि, बैंकों द्वारा विभिन्न सेवा प्रकारों, ग्राहक केन्द्रों की स्थापना, ग्राहक संबंध विकास आदि के माध्यम से निरंतर प्रयास में है। बैंकों के वर्तमान स्वरूप में परिवर्तन के कुछ दशकों पूर्व से तुलना की जाए तो वर्तमान में ग्राहक संख्या में महत्वपूर्ण वृद्धि हुई है एवं आज की बैंकिंग मध्यम वर्ग एवं गरीब तबके तक पहुँच गई है जो कि किसी जमाने में केवल एक सीमित वर्ग जैसे धनी, वर्ग एवं बड़े व्यवसाइयों, जो कि प्रौढ़ वर्ग होता था एवं जिस वर्ग को स्थानीय भाषा के अतिरिक्त वैश्विक भाषा का सम्पूर्ण या सामान्यतया कार्यगत ज्ञान होता था, जिसके परिणामस्वरूप बैंकों व अन्य संगठनों से व्यवहार करने में उन्हें किसी प्रकार की दुविधा या हिचक नहीं होती थी।

परंतु आज के बैंकिंग परिवेश में, जन-जन तक बैंक की सेवाओं की पहुँच का दौर है जिसमें बड़े शहरों में निवास करने वाले व्यक्तियों से लेकर गांवों में निवास करने वाले कृषकों आदि तक पहुंच है साथ ही चाहे बड़े कॉर्पोरेट हों या लघु व सूक्ष्म व्यवसाय करने वाले छोटे या मझोले व्यापारी, मिलों में काम करने वाला अधिकारी, क्लर्क हो या खेतों में काम करने वाला किसान सभी बैंकों से किसी न किसी सेवा उत्पाद के माध्यम से जुड़े हुए हैं और सभी वर्गों की आर्थिक उन्नति के लक्ष्य को लेकर बैंकों द्वारा सभी को जोड़ा जा रहा है। बैंकों के अपने व्यवसाय में वृद्धि के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए सभी वर्गों के व्यक्तियों से व्यवहार करना होता है। सेवा उत्पादों को विक्रय करना, ग्राहकों को सुविधाएं/सेवाएं, खातों को खोलना/संचालन करना, ऋण प्रदान करना आदि के लिए आपसी व्यवहार किया जाता है और यदि वह उनकी (ग्राहकों) बोलचाल की भाषा में हो तो संवाद करने में सरलता, आपसी प्रेम व विश्वास में वृद्धि होती है जो ग्राहक को बैंक के साथ बांधे रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। मनुष्य एक संवेदनशील प्राणी है जो आदर व सम्मान के लिए कुछ भी करने के लिए तैयार होता है और यही आदर और सम्मान यदि उसे उसकी स्वयं की भाषा में मिले तो वह उसका पूर्ण ग्रहण व मन से समावेश करता है जो सीधे उसके हृदय तक पहुँचती है और ग्राहक - बैंक संबंधों में मजबूती

लाती है। भाषा की समानता बैंक से ग्राहक के साथ संबंध में वृद्धि पर आपसी व्यवहार को बढ़ाते हैं जिसके परिणामस्वरूप बैंक का व्यवसाय बढ़ता है। व्यवसाय में वृद्धि से देश के निवासियों के जीवन स्तर में सुधार होता है। भाषा के बिना या भाषा की जटिलता दुविधाओं को बढ़ाती है, विवादों को निमंत्रण देती है जिसका प्रत्यक्ष प्रभाव बैंकों के व्यवसाय पर पड़ता है और खराब व्यवहार बैंक के व्यवसाय के साथ-साथ बैंक की साख को भी क्षति पहुँचाता है, जिसके प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष प्रभाव बैंक के कारोबार, बैंक के अंशों के मूल्य, लोगों के मध्य अविश्वास, संबंधों में कमी, ग्राहकों का पलायन, बैंकों के अंशधारकों में अविश्वास आदि तत्वों को जन्म देने में सहायक होते हैं। भाषा की सरलता, सहजता संबंधों को प्रगाढ़ कर व्यवसाय विरोधी तत्वों को दूर रख, आपसी संवाद व विचारों के आदान-प्रदान को सुगम व सरल बनाती है।

हिंदी का एक प्रसिद्ध मुहावरा है - ''मीठे बोल बड़े अनमोल'' और यही मीठे बोल यदि ग्राहक की अपनी भाषा में हो तो वह ''सोने पे सुहागा'' जैसा काम करता है। अतः शब्दों की मिठास यदि सुनने वाले या कहने वाले की भाषा में अभिव्यक्त की जाए, तो वह सुनने वाले के हृदय को प्रफुल्लित करती है जिससे न केवल आपसी व्यवहार प्रगाढ़ होता है अपितु बैंक के प्रति ग्राहक के विश्वास को भी कायम रखती है।

प्रधान कार्यालय, अग्रिम विभाग

राजभाषा के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने हेतु उपाय

सोनी कुमार ढेहरिया

भाषा मानव जीवन का वो सशक्त माध्यम है जिसके द्वारा मानव समाज अपनी सभ्यता संस्कृति, ज्ञान-विज्ञान आदि को पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित करता आया है। आज हमारे पास मानव संस्कृति की जो भी विचारधाराएं, परंपराएं, रीति-रिवाज, संस्कार या वैज्ञानिक तकनीकें आदि मौजूद हैं या संरक्षित हैं, उन्हें मानव ने भाषा के द्वारा ही अपनी संततियों के माध्यम से आगे हस्तांतरित और संरक्षित किया तथा मानव उनमें अपनी आवश्यकतानुरूप सुधार करता चला गया। भाषा ने ही मानव जीवन को सजीव बनाया अन्यथा यह मानव जीवन अत्यंत नीरस होता। यह भाषा ही है जिसने मानव के मूक जीवन को अभिव्यक्ति की शक्ति दी। फिर चाहे वह अभिव्यक्ति का लिखित रूप हो या मौखिक रूप। जब हम अपने विचारों को भाषा के माध्यम से व्यक्त करते हैं तो एक अलग ही संतुष्टि मन को मिलती है और जब यह अभिव्यक्ति अपनी मातृभाषा में की जाए तो पूर्ण आत्मसंतुष्टि मिलती है। ऐसा है यह भाषा का जादू।

भारतवर्ष अपनी सभ्यता-संस्कृति व भाषाओं के लिए प्राचीन काल से ही संपूर्ण विश्व में प्रसिद्ध रहा है। लगभग समग्र विश्व भारत के प्रत्येक क्षेत्र की अलग संस्कृति व भाषा की पृथक् विशेषता से परिचित है। इसीलिए भारत को अनेकता में एकता के लिए भी जाना जाता है। भारत के विभिन्न क्षेत्रों की संस्कृति के अनेकों मोतियों को एकता के सूत्र में पिरोने वाली भी भाषा ही है। भारतवासी प्राचीन काल से लेकर अब तक अनेकों भाषाओं की सरसता का आस्वादन करते रहे हैं। समय-समय पर अलग-अलग भाषाएं भारतवासियों के उद्गार व्यक्त करने का माध्यम बनीं। संस्कृत तो भारत की सबसे प्राचीन भाषा रही ही है। इसके अतिरिक्त अनेकों भाषाओं ने भारत में ख्याति प्राप्त की और भारतवासियों की अभिव्यक्ति का माध्यम बनीं। कभी पालि, कभी प्राकृत, कभी अरबी, कभी फारसी, कभी अंग्रेजी और अब इस गौरव को हिंदी ने प्राप्त किया है। विदेशी शासनकाल में जिस भारतीय भाषा ने सभी भारतीयों को एकता के सूत्र में पिरोया, वह हिंदी भाषा ही थी और इस विशेषता के कारण ही हिंदी को आजादी के बाद राजभाषा का दर्जा दिया गया।

आज हमारी राजभाषा का प्रसार समग्र भारत में तो हो ही चुका है साथ ही वह विदेशों में भी अपना शंखनाद कर चुकी है। इस गौरवमयी विशेषता के बावजूद अभी कुछ भारतीयों, विशेषतः युवा वर्ग में से कुछ को हम अपनी राजभाषा हिंदी के प्रति निरुत्साहित देखते हैं। आमतौर पर कई युवाओं को हमने यह भी कहते सुना होगा कि हमने अंग्रेजी माध्यम से

पढ़ाई की है। इसलिए हमें हिंदी नहीं आती। इसका मुख्यः कारण हम भारतीयों में अपनी भाषा के प्रति उस प्रेम और उत्साह का अभाव है जो हर नागरिक के मन में अपनी मातृभूमि व देश के प्रति होता है। हमारी हिंदी भाषा के मूल रूप से, अधिकांशतः प्रशासनिक कार्यों में उपेक्षित होने का कारण भी यही है। यो बात अलग है कि एक लंबे अरसे तक अंग्रेजी सल्तनत ने हमारे देश पर राज किया, जिसका प्रभाव अभी भी हमारे राजकार्यों में दृश्यमान है परंतु ऐसा नहीं है कि हम अपनी भाषा में काम नहीं कर सकते बल्कि अपनी भाषा में काम करके तो प्रगति के चरम् पर पहुँचा जा सकता है। बस इसके लिए तो हमें अपनी मानसिक धारणा को बदलना है और इस बात को समझना है कि हमारी राजभाषा हिंदी का प्रयोग ही हमारे लिए सर्वोपरि व सर्वोपयोगी है। इस बात को जिस दिन भली-भांति जान व समझ लिया जाएगा, हिंदी भाषा का प्रयोग स्वतः बढ़ने लगेगा और अपनी विकास गति को निश्चित रूप से बढ़ा सकेंगे।

राजभाषा का प्रयोग समग्र भारत में बढ़ाने के लिए या समग्र भारत को हिंदीमय करने के लिए भारत सरकार ने अनेकों उपाय किए हैं जिसमें काफी हद तक सफलता भी मिली है परंतु अभी लक्ष्य की पूर्ण प्राप्ति नहीं हुई है। अतः इस दिशा में और ज्यादा कार्य किए जाने की जरूरत है। राजभाषा के प्रयोग को द्रुत गति देने के लिए अनेक उपाय किए जा सकते हैं लेकिन ये उपाय तभी कारगर होंगे जब इन पर गंभीर अमल करमाया जाए तथा इनका प्रभावी कार्यान्वयन भारत सरकार के कार्यालयों के साथ-साथ प्रत्येक भारतीय अपने व्यक्तिगत स्तर पर भी सुनिश्चित करे। आइए जानें कि अपनी राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ाने की दिशा में क्या-क्या उपाय किए जा सकते हैं :

राजभाषा के प्रगामी प्रयोग को बढ़ाने हेतु उपाय :

- सभी विद्यालयों, भले ही वे सरकारी हों या निजी, में पहली कक्षा से 10वीं कक्षा तक हिंदी विषय को अनिवार्य विषय के रूप में पढ़ाया जाए, जिससे बच्चों में भाषिक आधार तैयार हो सके।
- पहली कक्षा से 10वीं कक्षा तक हिंदी विषय में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों (विशेष रूप से भाषिक क्षेत्र 'ख' और 'ग' में) को 'विशेष हिंदी पुरस्कार योजना' के तहत पुरस्कार प्रदान किया जाए, ताकि वे अधिकाधिक हिंदी प्रयोग के प्रति प्रेरित हों।
- विद्यालयों/महाविद्यालयों/विश्वविद्यालयों में पदस्थ हिंदी अध्यापकों/प्राध्यापकों व अन्य क्षेत्रीय भाषा अध्यापकों/प्राध्यापकों द्वारा तिमाही आधार पर एक 'भाषिक दक्षता कार्यशाला' का आयोजन भी किया जा सकता है जिसमें बच्चों की भाषिक दक्षता को जाँचा जाए। तदनुसार उनकी भाषिक आवश्यकतानुरूप आवश्यक उपाय जैसे- वाचन, लेखन, वाक्य-शुद्धीकरण आदि किए जा सकते हैं।
- विद्यालयों/महाविद्यालयों में 'विशेष हिंदी भाषा दक्षता अभियान' भी चलाया जा सकता है, जिसमें समयानुसार हिंदी स्वरचित कविता पाठ प्रतियोगिता, हिंदी निबंध प्रतियोगिता, हिंदी व्याकरण शुद्धि प्रतियोगिता, शब्द पर्याय प्रतियोगिता आदि का आयोजन कर बच्चों की हिंदी भाषा दक्षता परीक्षण किया जा सकता है।
- भाषिक क्षेत्र 'ख' व 'ग' में स्थित विद्यालयों में हिंदी नाटक-नाटिकाओं का आयोजन किया जाए तथा समयानुसार विद्यालयों में शैक्षिक लघु हिंदी चलचित्रों का भी प्रदर्शन किया जा सकता है।
- व्यावसायिक शिक्षा विशेष रूप से विधि, चिकित्सा, आई. टी., बैंकिंग जैसे विषयों में हिंदी माध्यम से शिक्षा प्राप्त किए जाने के विकल्प उपलब्ध करवाए जाएं।
- भाषिक क्षेत्र 'ख' तथा 'ग' में हिंदी माध्यम से व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले मेधावी विद्यार्थियों को हिंदी प्रयोग के प्रति प्रोत्साहित करने हेतु प्रोत्साहन राशि एवं हिंदी प्रवीणता प्रमाण-पत्र भी प्रदान किया जा सकता है।
- विद्यालयों/महाविद्यालयों/विश्वविद्यालयों में हिंदी दिवस व विश्व हिंदी सम्मेलनों के दौरान विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाए तथा

बच्चों को तत्संबंधी जानकारी दी जाए। इसमें हिंदी वाचन प्रतियोगिताओं व साहित्य सृजन प्रतियोगिताओं पर विशेष ध्यान दिया जाए।

- वर्तमान युग सूचना प्रौद्योगिकी का युग है। आज खरीदारी, व्यापार, बैंकिंग, टिकट बुकिंग आदि सभी

कार्य पूर्णतया कंप्यूटर/इंटरनेट से हो रहे हैं। अतः बेहतर होगा कि हिंदी को सूचना प्रौद्योगिकी की भाषा बनाया जाए। जब भी कोई नई तकनीक आए तो यदि उसे द्विभाषी रूप में डेवलप किया जाए तो वह हिंदी के बढ़ते प्रयोग को द्रुत गति देने में काफी सहायक सिद्ध हो सकता है।

- प्राचीन काल में मानव द्वारा शिक्षा प्राप्त करने का मूल उद्देश्य मोक्ष की प्राप्ति हुआ करता था लेकिन वर्तमान में शिक्षा रोजगारपरक बन चुकी है। अतः यह अति आवश्यक है कि हम जो भी शिक्षा ग्रहण करें, उससे हमें रोजगार के अच्छे अवसर प्राप्त हों। इसलिए हिंदी के विकास के लिए हमें हिंदी माध्यम से शिक्षा प्राप्त करने वाले वर्ग के लिए रोजगार के पर्याप्त अवसर उपलब्ध कराने की दिशा में विचार करने की जरूरत है।

- बाजार में निजी संस्थान एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। क्योंकि पत्रिका किसी संस्थान का आईना होती है इसलिए प्रत्येक निजी संस्थान की ओर से भी एक हिंदी गृह-पत्रिका (त्रैमासिक, अधिकतम 20/30 पृष्ठ) का प्रकाशन करवाया जा सकता है। जिसमें उसकी व्यावसायिक गतिविधियों के साथ-साथ उसके उत्पादों की जानकारी भी समाहित हो। इससे उस संस्थान के स्टाफ सदस्यों के साथ आमजन को भी हिंदी के प्रति आकृष्ट किया जा सकता है।

- निजी व्यावसायिक संस्थानों-प्रतिष्ठानों द्वारा भी दिन-दैनन्य प्रयोग की सामग्री पर दिए जाने वाले विवरण अंग्रेजी व हिंदी दोनों ही भाषाओं में दिए जाने के लिए आवश्यक कदम उठाए जाएं। यह नुस्खा कई संस्थान अपना व्यापार बढ़ाने के उद्देश्य से अपना भी रहे हैं।

- जिला स्तर भी हिंदी माध्यम से क्षेत्रीय सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जा सकता है। जैसे - सामाजिक विषयों पर लोकगीत कार्यक्रम, शैक्षिक नाटकों का आयोजन आदि।

अधिकारियों को प्रेरित करने हेतु उपाय :

अधिकांशतः यह देखा गया है कि ज्यादातर अधिकारी राजभाषा कार्यों के प्रति उदासीन होते हैं वो राजभाषा कार्यों को करते तो हैं परंतु अनमने मन से। जिससे राजभाषा हिंदी के प्रति उनकी अरुचि बढ़ती रहती है और फिर वे राजभाषा कार्यों को न के बराबर महत्व देते हैं। दूसरी ओर, राजभाषा अधिकारी जो हिंदी के प्रयोग को अधिकाधिक बढ़ाने का बीड़ा उठाए हुए हैं वे अपने प्रारंभिक काल में तो पूरे उत्साह एवं ऊर्जा से कार्य करते हैं, परंतु अन्य अधिकारियों का स्वयं के प्रति व्यवहार देखकर वे भी धीरे-धीरे हतोत्साहित होने लगते हैं जो कई बार हिंदी अधिकारी की कमजोरी बन जाती है। हिंदी अधिकारी को इसी नकारात्मकता से बचना है क्योंकि उसे न केवल स्वयं कार्य करना है अपितु अन्य अधिकारियों से कार्य करवाना भी है। अतः हिंदी कार्यों के प्रति उसका स्वयं ऊर्जावान होना अति आवश्यक है क्योंकि एक जगता दीपक ही दूसरों को रोशनी देता है तथा दूसरे दीपक को जगा सकता है।

जहाँ तक अन्य अधिकारियों का सवाल है तो भारत देश में काम करने वाले लगभग सभी लोग भारतीय हैं और वे सभी अपने भारतवर्ष को प्रेम भी करते हैं परंतु सच्चा देशप्रेमी वही होता है जो अपने राष्ट्र की प्रत्येक वस्तु को प्राथमिकता दे, सम्मान दे। एक राष्ट्र की पहचान उसके राष्ट्रीय ध्वज,

राष्ट्रीय गान तथा राजभाषा से होती है। हम भारतीय राष्ट्रीय ध्वज का सम्मान करते हैं, राष्ट्रगान से देश को सम्मानजनक सलामी भी देते हैं लेकिन राजभाषा में काम करने की बात आती है तो हम संकोच क्यों महसूस करते जबकि इसका प्रयोग तो हमें प्रसन्नतापूर्वक अधिक से अधिक करना चाहिए। इस दिशा में हिंदी अधिकारी तो अपने दायित्व का निर्वाह पूरी तटस्था एवं कर्मठता से करने में डटे है लेकिन उनके लक्ष्य की पूर्णतया प्राप्ति के लिए अन्य अधिकारियों के मानसिक परिवर्तन की गहन आवश्यकता है। अधिकारियों के इस मानसिक परिवर्तन के लिए कुछ उपाय जो किए जा सकते हैं, निम्नानुसार हैं :-

- विभिन्न सरकारी विभागों/कार्यालयों में पदस्थ उच्चाधिकारियों का गृह-मंत्रालय राजभाषा विभाग के उच्चाधिकारियों के मार्गदर्शन में तिमाही/छमाही आधार पर 'हिंदी विचार-विमर्श कार्यक्रम' आयोजित किया जा सकता है, जिसमें हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु लिए गए निर्णयों को प्रभावी बनाया जाए। इसके लिए जाँच बिंदु भी बनाए जा सकते हैं।
- इसी क्रम में वार्षिक आधार पर एक 'राष्ट्रीय राजभाषा सम्मेलन' का आयोजन भी किया जा सकता है जिसमें विभिन्न कार्यालयों में पदस्थ राजभाषा अधिकारी/कर्मचारी, गृह-मंत्रालय, राजभाषा विभाग के उच्चाधिकारियों तथा हिंदी के प्रख्यात विद्वानों, कवियों, लेखकों के मार्गदर्शन में हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन की दिशा में विभिन्न नवोन्मेषी उपायों पर विचार-विमर्श करें तथा सकारात्मक निर्णय लें।
- सरकारी कार्यालयों बैंकों वित्तीय संस्थाओं में पदस्थ समस्त कार्मिकों (राजभाषा अधिकारियों के अतिरिक्त) के लिए एक 'राष्ट्रीय हिंदी प्रतियोगिता' का आयोजन किया जा सकता है।
- विभिन्न सरकारी कार्यालयों संस्थानों बैंकों कंपनियों वित्तीय संस्थाओं में आयोजित किए जाने वाले सभी प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रमों सामान्य कार्यक्रमों का संचालन पूर्ण रूप से हिंदी/द्विभाषी करने पर भी बल दिए जाने की आवश्यकता है।
- कंप्यूटर पर द्विभाषी रूप से कार्य करने में समर्थ अधिकारियों को अन्य अधिकारियों की अपेक्षा पदोन्नतियों में प्राथमिकता एवं वरीयता दी जाए।
- कंप्यूटर पर कार्य करने वाले अधिकारियों को द्विभाषी यूनिकोड समर्थित कंप्यूटर ही उपलब्ध करवाए जाएं।
- नई भर्ती के दौरान नए भर्ती किए जाने वाले अधिकारियों को हिंदी में कार्य करने हेतु विशेष प्रशिक्षण दिया जाए।

हिंदी के पूर्ण विकास के लिए हमें हिंदी को शिक्षा का माध्यम बनाना होगा। वर्तमान में युवाओं का झुकाव अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा प्राप्त करने की ओर अधिक है जो हमारी हिंदी भाषा के विकास में बाधक है। क्यों कि युवाओं का शैक्षिक आधार अंग्रेजी माध्यम होता है अतः उन्हें हिंदी जानने-समझने में थोड़ी परेशानी होती है। परंतु अंग्रेजी भाषा को सीखने की ओर इतना भी झुकाव ठीक नहीं कि अंग्रेजी के अंतर्राष्ट्रीय महत्व को देखते हुए अपनी हिंदी भाषा के राष्ट्रीय महत्व को दरकिनार किया जाए। अंग्रेजों ने अपने मनसूबों को पूरा करने के लिए शिक्षा रूपी हथियार को अपनाया था। अपने इस कार्य में उन्होंने पूरी सफलता हासिल की। परिणाम हम सबके सामने है। आज अंग्रेजी अंतर्राष्ट्रीय भाषा बन चुकी है। हमें बस यही बात समझनी है कि शिक्षा किसी राष्ट्र की दशा और दिशा दोनों ही बदल देती है। एक और बात जिस पर ध्यान देने की जरूरत है कि अपने राष्ट्र के इतिहास, सभ्यता-संस्कृति को अपनी ही भाषा में ही जाना व समझा जा सकता है। अतः कहीं ऐसा न हो कि विदेशों को जानने की चाह में हम अपने ही भारतीय समाज को भूल जाएं। इसीलिए शिक्षा ही वह माध्यम/सोत है जिससे हिंदी को पूरे भारत में फैलाया जा सकता है और हिंदी को उसका वास्तविक अधिकार दिलाया जा सकता है और जब शिक्षा में हिंदी की नींव मजबूत होगी तो बाकी सब कार्य हिंदी में हिंदी के लिए स्वयं ही होने लगेंगे।

हिंदी के समग्र विकास के लिए यह भी आवश्यक है कि हम सब भारतीयों को अपना स्वयं का मानसिक पटल या धरातल भी इसके लिए परिवर्तित तैयार करना होगा कि हिंदी हमारी भाषा है और हम से ही यह जीवित है। इसका जीवनाधार हमारे द्वारा इसका प्रयोग किया जाना है। हम जितना अधिक इसका प्रयोग करेंगे, उतनी ही यह भाषा फलेगी और फूलेगी। जब हमारे द्वारा शिक्षा, व्यवसाय, साहित्य, विज्ञान और चिकित्सा आदि सभी क्षेत्रों में इसका प्रयोग खुलकर किया जाएगा तो हिंदी स्वयं ही फार्मूला वन कार की भांति विकास के ट्रेक पर तीव्र गति से दौड़ती नजर आएगी।

विचार- मंथन :

इस चित्र में आप देख रहे हैं कि हिंदी को कुछ मानव रूप स्तंभों ने ऊपर की ओर उठाया हुआ है। यदि आपसे इस चित्र

के बारे में पूछा जाए तो इस विषय में आप सभी की अलग राय/विचार होगा, परंतु मुझे यहाँ जो नजर आ रहा है उसे मैं आपसे साझा करना चाहूँगा। इस चित्र में हिंदी को ऊपर उठाते हुए दिखाया गया है। साफ जाहिर है कि हिंदी को सहारे की जरूरत है लेकिन यह किसी प्रकार का उसके व्याकरण या शब्दकोष का सहारा नहीं है क्योंकि ये दोनों ही हिंदी भाषा में प्रचुर मात्रा में है एवं हिंदी इनमें समृद्ध है बल्कि यह तो हम भारतीयों के प्रयोग रूपी सहारे को ताक रही है। साफ है कि हमारी अपनी भाषा हमें पुकार रही है। दूसरी बात, इस चित्र में जिस प्रकार मानव रूपी स्तंभों ने हिंदी को ऊपर उठाया है ऐसे ही मजबूत स्तंभों की आज हिंदी को आवश्यकता है। यहाँ अंग्रेजों का वो तरीका (मानसिक रूप से हिंदी) जो उन्होंने भारत में राज करने के लिए अपनाया था, अपनाना होगा। जिस दिन हम भारतीय इस प्रकार (चित्र में दिखाए अनुसार) सम्मान देते हुए हिंदी को ऊपर उठाने/उसके राष्ट्रीय विकास के साथ अंतर्राष्ट्रीय विकास की बात मन में ठान लेंगे, तो हिंदी को विश्वव्यापी होने में ज्यादा समय नहीं लगेगा और फिर हमें विदेशियों के मुख से भी हिंदी सुनने की इच्छा होगी।

- प्रधान कार्यालय राजभाषा विभाग

विपरीत परिस्थितियों में कुछ लोग टूट जाते हैं, तो कुछ लोग रिकॉर्ड तोड़ते हैं।

प्रधान कार्यालय स्तर पर आयोजित शहीदों के सरताज श्री गुरु अरजन देव जी के शहीदी गुरुपर्व पर कीर्तन का आयोजन

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उपसमिति द्वारा

समिति के संयोजक श्री मुलायम सिंह यादव का स्वागत करते हुए महाप्रबंधक (राजभाषा) श्री दीन दयाल शर्मा।

हमारे बैंक की श्रीनगर शाखा का राजभाषा का निरीक्षण

महामहिम राष्ट्रपति के आदेश बैंक अधिकारियों को सौंपते हुए समिति के उपाध्यक्ष डॉ. सत्यनारायण जटिया, श्री हुकम देव नारायण व समिति के सदस्यगण।

एक संपूर्ण दृश्य

प्रधान कार्यालय स्तर पर आयोजित शहीदों के सरताज श्री गुरु अरजन देव जी के शहीदी गुरुपर्व पर छबील और लंगर का आयोजन किया गया। छबील एवं लंगर के कुछ दृश्य

ग्राहक के मुख से.......

मैं राजेश्वर सांधी पुत्र स्व. श्री आनन्द स्वरूप सांधी पंजाब एण्ड सिंध बैंक (जहां सेवा ही जीवन ध्येय है) से सन् 1973 से जुड़ा हूँ।

बैंक अपने विजन को सच में अपनी उत्कृष्ट ग्राहक सेवा द्वारा चरितार्थ कर रहा है।

मेरा इस संस्था के साथ सफर सन् 1973 में करोल बाग शाखा, हरध्यान सिंह रोड़ से आरम्भ हुआ। शाखा में मैंने अपना खाता 'मंगलम' नाम से शुरू किया जो कि दिल्ली में 'सियाराम सूटिंग्स' का पहला शोरूम था।

संस्था की ग्राहक सेवा एवम् कर्मचारियों के मिलनसार व्यवहार को देखते हुए मैंने अपना काम आगे बढ़ाया एवम् सन् 1975 में मैंने संस्था की तिलक नगर शाखा में अपनी शॉप 'सुंदरम मेन्स वियर' आरम्भ की परन्तु कुछ आर्थिक कारणों से मैं अपना काम आगे नहीं बढ़ा पा रहा था लेकिन संस्था ने मुझे 'लिमिट सैंक्शन' की एवम् आज मेरी चार शॉप 'सुन्दरम् वेस्टमेंट', 'सुन्दरम् टेलर', 'सांधी ओवरसीज', 'सुन्दरम' तिलक नगर में है। आज मेरे प्रत्येक खाते में 50 लाख से 1 करोड़ रुपये शेष रहते हैं।

ईश्वर की अनुकम्पा एवम् पंजाब एण्ड सिंध बैंक के योगदान द्वारा आज मेरा काम दिन-दूनी-रात-चौगुनी तरक्की कर रहा है।

आज मैं यह कहने में कतई संकोच नहीं करूंगा कि आज मैं जिस मुकाम पर खड़ा हूँ इसमें 'पंजाब एण्ड सिंध' बैंक का बहुत बड़ा योगदान है। मैं और मेरे परिवार के साथ मेरे व्यवसाय से जुड़े सभी कार्मिक और मेरे कई ग्राहक भी जो बैंक किसी न किसी रूप में जुड़े हैं। हृदय की गहराइयों से संस्था का शुक्रिया करते हैं एवम् ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि यह संस्था नवीन ऊंचाइयों को छुए एवम् अपनी उत्कृष्ट ग्राहक सेवा से ग्राहकों का जीवन बदलने में योगदान करे।

'पूर्ण आदर सहित'

आपका ग्राहक

राजेश्वर सांधी

तिलक नगर, नई दिल्ली

मूल अधिकार एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता

उत्तम कुमार शुक्ल

अभिव्यक्ति हमारे जीवन का एक अभिन्न अंग है। हम अपनी अभिव्यक्ति शब्दों द्वारा, लिखित रूप से अथवा अपनी भाव भंगिमा द्वारा प्रदर्शित करते हैं। अभिव्यक्ति किसी विषय पर व्यक्ति की सोच को दर्शाती है।

व्यक्ति को व्यक्तिगत गरिमा प्रदान करने के उद्देश्य से भारतीय संविधान में भाग 3 के अंतर्गत व्यक्ति के मूल अधिकारों का वर्णन किया गया है। इसे **मैग्ना कार्टा** भी कहा जाता है। भाग 3 के अंतर्गत 6 मूल अधिकार दिए गए हैं। स्वतंत्रता के अधिकार के अंतर्गत अनुच्छेद 19 में वाक्-स्वातंत्र्य/अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता आदि विषयक कुछ अधिकारों को भारतीय संविधान द्वारा संरक्षण प्रदान किया गया है। अनुच्छेद 19-1(क) के अंतर्गत सभी नागरिकों को वाक् एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अधिकार दिया गया है जिसके अंतर्गत हम अपने विचारों को अभिव्यक्त कर सकते हैं।

यहाँ यह उल्लेख करना आवश्यक है कि अनुच्छेद 19-1(क) की अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता अनुच्छेद 19(2) में उल्लिखित निबंधनों के अध्यधीन है इन निबंधनों से संबंधित विषय पर कोई भी व्यक्ति सामाजिक रूप से अपने विचार व्यक्त नहीं कर सकता है ऐसा करना असंवैधानिक कृत्य माना जाएगा। इन निबंधनों में निम्नलिखित विषयों को शामिल किया गया है :

- भारत की अखंडता,
- लोक व्यवस्था,
- राज्य की सुरक्षा,
- विदेशी राज्यों के साथ मित्रवत् संबंध,
- अश्लीलता,
- नैतिकता,
- मान हानि,
- अपराधों की उत्तेजना,
- न्यायालय की मानहानि शामिल है।

अतः यह ध्यान देने योग्य है कि हम अपने विचारों को प्रदर्शित करते समय ऐसे विषय को शामिल न करें जो उपरोक्त निबंधनों के अधीन मूल अधिकारों का अतिलंघन करे।

मूल अधिकार

समानता का अधिकार (अनुच्छेद 14-18)	14. विधि के समक्ष समता 15. धर्म, मूलवंश, जाति, लिंग या जन्म स्थान के आधार पर विभेद का प्रतिषेध 16. लोक नियोजन के विषय में अवसर की समता 17. अस्पृश्यता का अंत 18. उपाधियों का अंत
स्वतंत्रता का अधिकार (अनुच्छेद 19-21, 21क, 22)	19. वाक्-स्वातंत्र्य आदि विषयक कुछ अधिकारों का संरक्षण 20. अपराधों के दोष सिद्धि के संबंध में संरक्षण 21. प्राण और दैहिक स्वतंत्रता का संरक्षण 22. शिक्षा का अधिकारी
शोषण के विरुद्ध अधिकार (अनुच्छेद 23-24)	23. मानव के दुर्व्यापार और बलात्-श्रम का प्रतिषेध 24. कारखानों आदि में बालकों के नियोजन का प्रतिषेध

धर्म की स्वतंत्रता का अधिकार (अनुच्छेद 25-28)	25. अंतःकरण की और धर्म की अबाध रूप से मानने,आचरण और प्रचार करने की स्वतंत्रता 26. धार्मिक कार्यों के प्रबंध की स्वतंत्रता 27. किसी विशिष्ट धर्म की अभिवृद्धि के लिए करों के संदाय के बारे में स्वतंत्रता 28. कुछ शिक्षा संस्थाओं में धार्मिक शिक्षा या धार्मिक उपासना में उपस्थित होने के बारे में स्वतंत्रता
संस्कृति और शिक्षा अधिकार (अनुच्छेद 29-30)	29. अल्पसंख्यक वर्गों के हितों का से संबंधी संरक्षण - 30. शिक्षा संस्थाओं की स्थापना और प्रशासन करने का अल्पसंख्यक वर्गों का अधिकार
संवैधानिक उपचारों का अधिकार (अनुच्छेद 32-34)	32. इस भाग द्वारा प्रदत्त अधिकारों को प्रवर्तित कराने के लिए उपचार। 33. इस भाग द्वारा प्रदत्त अधिकारों का, बलों आदि को लागू होने में, उपांतरण करने की संसद की शक्ति 34. जब किसी क्षेत्र में सेना विधि प्रवृत्त है तब इस भाग द्वारा प्रदत्त अधिकारों पर निर्बंधन। 35. इस भाग के उपबंधों को प्रभावी करने के लिए विधान।

मूल अधिकारों को प्रवर्तित कराने की न्यायालय की अधिकारिता

इस भाग द्वारा प्रदत्त अधिकारों को प्रवर्तित कराने के लिए समुचित कार्यवाई द्वारा उच्चतम न्यायालय में समावेदन करने का अधिकार प्रत्याभूत किया गया है। इस भाग द्वारा प्रदत्त अधिकारों में से किसी को प्रवर्तित कराने के लिए उच्चतम न्यायालय को ऐसे निदेश या आदेश या रिट, जिनके अंतर्गत बंदी प्रत्यक्षीकरण, परमादेश, प्रतिषेध, अधिकार-पृच्छा और उत्प्रेषण रिट हैं, जो भी समुचित हो, निकालने की शक्ति होती है।

मूल अधिकार को प्रवर्तित कराने की उच्चतम न्यायालय की अधिकारिता की भांति, अनुच्छेद 226 के अंतर्गत उच्च न्यायालय को अधिकारिता दी गयी है यह देखने में आता है कि माननीय न्यायालय मूल अधिकार में संक्रमण करने वाले विधान अथवा विधियों के प्रसंग को असंविधानिक घोषित कर देते हैं हाल में ही माननीय न्यायालय ने सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम, 2000 की धारा 66ए को मूल अधिकारों में हस्तक्षेप मानते हुए असंविधानिक घोषित कर दिया है धारा 66ए में संचार सेवाओं के माध्यम से आक्रामक संदेश भेजने को अपराध माना गया था जिसकी सजा 3 वर्ष तक की कैद एवं जुर्माना निर्धारित की गई थी। माननीय उच्चतम न्यायालय ने 24 मार्च, 2015 को रिट पेटीशन (क्रिमिनल) नंबर-167/2012, श्रेया घोषाल बनाम भारत संघ का निस्तारण करते हुए सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम, 2000 की धारा 66ए को मूल अधिकारों में हस्तक्षेप मानते हुए असंविधानिक घोषित कर दिया है। यहाँ यह उल्लेख करना समीचीन है कि सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम की धारा 66ए मूल अधिकार के अंतर्गत अनुच्छेद 19 का उल्लंघन कर रही थी।

अतएव यह हमारा कर्तव्य है कि हम संवैधानिक उपबंधों का आदर करें एवं किसी ऐसे विषय पर अपने विचार प्रदर्शित करें जो देश हित व संगठन के हित में न हो।

– प्रधान कार्यालय, सामान्य प्रशासन विभाग

आँचलिक कार्यालय, फरीदकोट (लीड बैंक) की ओर से प्रधानमंत्री मुद्रा योजना के तहत मेगा कैम्प का आयोजन

मुख्य अतिथि श्री रमिन्दरजीत सिंह जी, महाप्रबंधक (स्थानीय प्रधान कार्यालय) को बुके भेंट करते हुए आँचलिक प्रबंधक श्री जसवंत सिंह जी व मुख्य प्रबंधक श्री मंजीत सिंह जी।

श्री रमिन्दरजीत सिंह जी, महाप्रबंधक (स्थानीय प्रधान कार्यालय) दीप प्रज्वलित करके कार्यक्रम का शुभारम्भ करते हुए।

मेगा कैम्प में मुद्रा योजना के तहत लोन मंजूरी के प्रमाण पत्र बाँटते हुए श्री रमिन्दरजीत सिंह जी, महाप्रबंधक (स्थानीय प्रधान कार्यालय), आँचलिक प्रबंधक श्री जसवंत सिंह जी व मुख्य प्रबंधक श्री मंजीत सिंह जी।

आँचलिक प्रबंधक श्री जसवंत सिंह जी उपस्थित जन समूह को सम्बोधित करते हुए।

मेगा कैम्प में उपस्थित जन समूह।

धार्मिक आयोजन

श्री राजीव रावत, आंचलिक प्रबंधक, लखनऊ अपने स्टाफ सदस्यों के साथ प्रसाद वितरित करते हुए।

आंचलिक कार्यालय, गुड़गांव

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल

सुशील कुमार

अक्सर हम यही सोचते हैं कि कुछ नया करने या नया खोजने के लिए अंग्रेज़ी भाषा का ज्ञान बहुत ज़रूरी है। हम भारतीय तो यहाँ तक भी तर्क देते हैं कि अंग्रेज़ी न आने के कारण ही हमारा देश पिछड़ा हुआ है। हमारे पास सभी विश्व स्तरीय संसाधनों के मौजूद होने के बावजूद हमारे अंग्रेज़ी भाषा के कम ज्ञान की वजह से हम अपने संसाधनों का वैश्विक स्तर पर प्रयोग नहीं कर पा रहे हैं। इसी वजह से हम पीछे रह जाते हैं, लेकिन ये सोचना सरासर गलत है क्योंकि नवीनीकरण किसी भाषा का मोहताज नहीं है और ना ही किसी प्रकार के नवीनीकरण के लिए कोई भाषा सीखने की जरूरत होती है। नवीनीकरण के लिए एक ही मौलिक सिद्धांत है और वो है चिंतन, और चिंतन का मौलिक स्वरूप है निज भाषा यानि मातृभाषा।

विश्व में सबसे ज्यादा नवीनीकरण के सिद्धांत यहूदियों ने दिए हैं। विश्व के सबसे प्रसिद्ध वैज्ञानिक आइनस्टाइन भी यहूदी ही थे। आज भी यहूदियों की पहली भाषा हिब्रू है। अंग्रेज़ी को वहाँ तीसरी भाषा के रूप में मान्यता प्राप्त है। आज विश्व के सभी तकनीकी रूप से सक्षम व विकसित देशों कोरिया, जापान, चीन, फ्रांस, जर्मनी, स्लोवेनिया, हांगकांग आदि जो कामयाबी के शिखर पर विराजमान हैं, सभी अपनी मातृभाषा में काम करते हैं। इनमें से किसी भी मुल्क की भाषा अंग्रेज़ी नहीं है। यही नवीनीकरण की ताकत है। आज यही छोटे-छोटे मुल्क जिनकी कुल जनसंख्या हमारे भारत के किसी एक राज्य की आबादी से भी कम है, भारत में आकर लाखों लोगों को रोज़गार दे रहे हैं और हम भारतीय उन्हीं देशों की उन कंपनियों में अंग्रेज़ी पढ़ लिखकर नौकरियाँ ढूँढने के लिए खाक छानते हैं।

दुनिया के सबसे सृजनात्मक (क्रिएटिव) और नवप्रवर्तनशील (इनोवेटिव) देशों की पड़ताल करके पता चलता है कि आज सफलता के शिखर पर वही मुल्क विराजमान हैं जिनकी मातृभाषा और कर्मभाषा एक ही है। इसके विपरीत हमारे देश में लगभग हर एक व्यक्ति की ये धारणा बन चुकी है कि यदि कामयाबी का परचम फहराना है तो अंग्रेज़ी का दामन थाम लेना चाहिए। सभी का यही विश्वास है कि अंग्रेज़ी का ज्ञान मातृभाषा के ज्ञान से ज्यादा आवश्यक है। यही कारण है कि उच्च शिक्षा में अंग्रेज़ी ही एकमात्र विकल्प उभर कर सामने आती है। अब यही एक सवाल उठता है कि मातृभाषा की अनदेखी करके अंग्रेज़ी भाषा को अपनाकर हमने देश के विकास में क्या योगदान दिया है? अंग्रेज़ी का साथ होते हुए भी हमारी सामाजिक और राष्ट्रीय समस्याएँ ज्यों की त्यों बनी हुई है। बिना अपनी भाषा के हम कभी आपस में जुड़ नहीं पाएंगे और इसकी कल्पना भी संभव नहीं है। असल में मौलिकता या रचनाशीलता की कमी से हम पिछड़े हुए हैं क्योंकि विचारों की अभिव्यक्ति में मौलिकता का होना आवश्यक है और विचारों की अभिव्यक्ति के लिए हमारी मातृभाषा जो कि हमारे दिल, दिमाग और ज़ुबान के बीच तालमेल बनाती है और इसी तालमेल से मौलिकता पैदा होती है। जब हम दो अलग-अलग भाषाओं में बंट जाते हैं तो ये तालमेल टूट जाता है क्योंकि अंग्रेज़ी में हम दिमाग से बात

दूर से हमें आगे के सभी रास्ते बंद नजर आते हैं क्योंकि सफलता के रास्ते हमारे लिए तभी खुलते जब हम उसके बिल्कुल करीब पहुँच जाते हैं।

करते और मातृभाषा में हम दिल से बोलते हैं। मातृभाषा ही हमें मौलिक और रचनात्मक बनने में सहायता करती है।

अगर हम वैश्विक सृजनात्मक (क्रिएटिव) और नवप्रवर्तनशील (इनोवेटिव) देशों की सूचिका-2015 पर नज़र डालें तो 134 मुल्कों में सृजनात्मकता (क्रिएटिविटी) में 69वें और नवप्रवर्तनशीलता (इनोवेशन) में 81वें स्थान पर हम टिके हुए हैं और पिछले 4 वर्षों से हम लगातार नीचे खिसक रहे हैं। आज हम एक ऐसे मोड़ पर खड़े हैं जहां से आगे जाने का सिर्फ एक ही रास्ता खुला है। ये काबिले-गौर है कि हम भारतीय मूल रूप से उतने ही रचनात्मक हैं जितने कि अन्य देश। बस जरूरत है अपनी मातृभाषा को मंच प्रदान करने की। अगर भारत के 120 करोड़ लोग अपनी रचनात्मकता को वाणी देने में समर्थ हो जाएं तो पूरी दुनिया के सबसे ताकतवर देश के रूप में उभर सकते हैं। वरना कब तक हम पढ़-लिखकर भी विकसित देशों की नकल करते रहेंगे और उनके उत्पादों के उपभोक्ता बने रहेंगे?

– आंचलिक कार्यालय, फरीदकोट

ज़रा सोचिए.....

राजिंदर सिंह बेदली

उस लिफ्ट में उस दिन उस शख्स की बात मुझे कुछ अच्छी नहीं लगी। कैसा भद्दा मज़ाक कर रहा था वह अपने साथी नवीन से..... और वो भी सुबह के समय..... एक लिफ्ट में..... जिसमें ऑफिस के दूसरे लोग भी सफर कर रहे थे। आखिर लिफ्ट में बात करने का..... उसमें खड़ा होने का भी तो एक अदब होता है कि लिफ्ट में बोलना नहीं चाहिए..... दूसरे व्यक्ति से थोड़ा हट कर खड़ा होना चाहिए..... यदि कोई जानता भी है तो भी केवल ओठ से हल्की सी मुस्कुराहट ही होनी चाहिए और आँखें फ्लोर प्लेट पर होनी चाहिए कि लिफ्ट किस फ्लोर पर पहुँच गई है..... और..... अपना स्थान आने पर उतर जाना चाहिए बस..... इतना ही। और रमेश। आज तो हद ही कर दी उसने। वेनुका और भोंड़ा मज़ाक और वो भी साथी की पत्नी के बारे..... लोहड़ी के अगले ही दिन, सुबह-सुबह।

हमारा फ्लोर आ गया और हम उतर गए। मैंने रमेश को अलग से बुलाकर कहा..... 'कैसी बात कर रहे थे तुम आज लिफ्ट में।' उसी अंदाज़ में उसने फिर कहा 'दोस्तों के साथ इतना तो चलता ही है' और वह हँस दिया। मैंने कहा 'अच्छा दोस्त है तुम्हारा, क्या तुम्हें मालूम है कि तीन महीने पहले उसकी पत्नी का देहांत हो चुका है.....'। रमेश के पैरों तले ज़मीन निकल गई। वह घबरा गया। बोला 'अभी जाकर मैं उससे माफी माँगूगा'। मैंने उससे कहा 'यार कैसे तुम किसी से भी कोई भी मज़ाक कर सकते हो, अब और अधीर न बनो। उसे सीट पर सैटल हो जाने दो, बाद में जाकर ढंग से धीरे से उससे बात कर लेना।'

साथियों, यह तो महज़ एक उदाहरण है, लेकिन सच्चा है। ऐसी कितनी ही बातें होती हैं हमारे इर्द-गिर्द, और कितनी ही बातों में हम भी शामिल होते हैं। सामने वाले को नीचा दिखाना..... उसकी बेज़्ज़ती करना..... अपनी डींग हाँकना..... अहियत रखेया..... बेकार की बहस करना..... कहाँ, किसके सामने, क्या बात करनी है..... इसकी समझ न रखना आदि-आदि हज़ारों-हज़ारों बातें। अनजाने में हम और आप भी तो कहीं ऐसी ही तो नहीं..... ज़रा सोचिए??????????

– संपादक एवं प्रकाशक

काव्य-मंजूषा

ग़ज़ल

सुरजीत सिंह 'सुरजीत'

मिलने के रंगों - ढंगों और संस्कार का मुद्दा है,
प्यार का नहीं, ये तो इक व्यवहार का मुद्दा है।

किस्सा ए लैला मजनू नहीं, इस किस्से में शामिल,
ये इज़्ज़त का, इख़लाक का सत्कार का मुद्दा है।

यूँ पर मुल्क के किसी को भी, ज़लील नहीं करते,
ये उनकी खुशफहमी, उनके अहंकार का मुद्दा है।

इन्साफ़ का तराज़ू चाहे तो दोनों पलड़े बराबर,
बराबरी के हक़ का और अधिकार का मुद्दा है।

केवल एक की ही बात पर गर वो तवज्जो देंगे,
वो तो कहेंगे यही... कि इक बेकार का मुद्दा है।

कुछ कदम निकल चुके हैं, मीलों पावों से आगे,
बेलगाम ना निकलें, ये उनकी रफ़्तार का मुद्दा है।

ये आशियाँ है मेरा, कोई संसद भवन नहीं है,
जहाँ मुद्दा है क्या, बस यही तकरार का मुद्दा है।

है कारवाँ तो बहुत आगे निकल गया 'सुरजीत'
जो जेरे बहस है वो बस इक गुबार का मुद्दा है।

पूर्व वरिष्ठ प्रबंधक
आंचलिक कार्यालय, चंडीगढ़

ज़िंदगी

शौर्य कुमार मिश्रा

मालूम नहीं क्यूँ है तुमसे प्यार ज़िंदगी,
लेकिन मैं कर रहा बेशुमार, ज़िंदगी।।

रोज़ बनी जाते हैं रोज़ वो ही किस्से,
तू हो गया है रोज़ का अख़बार ज़िंदगी।।

कभी बिकता कभी खरीदता हर एक शख्स देखा,
तू रह गई है बनके एक बाज़ार ज़िंदगी।।

मौत मारती है बस एक आख़िरी दिन,
तू कर रही है रोज़ ही शिकार ज़िंदगी।।

लगने लगा है आजकल डर सा मुझे तुझसे,
चेहरे को अपने थोड़ा तो संवार ज़िंदगी।।

कब से यहीं थमी सी खड़ी रह गई है तू,
कुछ तो बढ़ा तू अपनी रफ़्तार ज़िंदगी।।

कर ले तैयार जख्म कोई आज तू फिर से,
फिर आ गया है मुझको कुछ करार ज़िंदगी।।

दे-दे के देना होगा तुझे फिर हिसाब इनका,
तूने जो रखी हैं खुशियाँ फिर उधार ज़िंदगी।।

आंचलिक कार्यालय, लुधियाना

बड़ा कौन : 'ईश्वर' या 'कैमरा'

किशन सिंह

अधिकतर सार्वजनिक स्थलों पर लिखा होता है,
'आप सी.सी. कैमरे की नज़र में हैं'
यह पढ़ते ही व्यक्ति होशियार हो जाता है,
और गलत काम करने से परहेज करता है,
जबकि ये इंसान द्वारा निर्मित एक उपकरण मात्र है,
हम भूल जाते हैं कि,

हम हर समय ईश्वर की नज़र में हैं,
और उनकी नज़र न खराब होती है, न बंद होती है,
न किसी के नियंत्रण में होती है,
ज़रा सोचिए बचने का कोई तरीका है?
'हमें ध्यान रखना है कि हम सदैव ईश्वर की नज़र में हैं'

प्र.का. अनुपालन, विभाग

प्रात:बेला

किशन सिंह

ए 'सुबह' तुम जब भी आना,
सब के लिए खुशियाँ लाना,
हर चेहरे पर 'हंसी' सजाना,
हर आँगन में 'फूल' खिलाना।
जो रो रहे हैं उन्हें हँसाना,
जो 'रूठे' हैं उन्हें मनाना....
जो 'बिछुड़े' हैं उन्हें मिलाना....
प्यारी 'प्रात:बेला' तुम जब भी आना,
सब के लिए भरपूर खुशियाँ लाना.....
'तुम्हें शत-शत प्रणाम'।

प्र.का. अनुपालन, विभाग

ऐसे देश को छोड़ देना चाहिए जहाँ न आदर है, न जीविका, न मित्र, न परिवार और न ही ज्ञान की आशा।

वित्त मंत्रालय, वित्तीय सेवाएं विभाग की समीक्षा बैठक

वित्त मंत्रालय, वित्तीय सेवाएं विभाग द्वारा 4 जून 2016 को आयोजित अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन के लिए आमंत्रित 9 वक्ताओं में, हमारे बैंक से श्री राजिंदर सिंह बेदली, मुख्य प्रबंधक (राजभाषा) को भी आमंत्रित किया गया। चित्र में श्री अनुप कुमार श्रीवास्तव (आई.ए.एस), सचिव(राजभाषा) (चित्र के बीचों बीच), डॉ. वेद प्रकाश दुबे, संयुक्त निदेशक (राजभाषा) वित्तीय सेवाएं विभाग, श्री रामाराव, कार्यकारी निदेशक (विजया बैंक), तथा अन्य उच्चाधिकारियों के पीछे खड़े 9 आमंत्रित वक्ताओं में श्री बेदली भी दिखाई दे रहे हैं।

दिनांक 03 व 04 जून 2016 को पुणे में वित्त मंत्रालय, वित्तीय सेवाएं विभाग की बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में सभी बैंकों के महाप्रबंधक (राजभाषा) तथा राजभाषा प्रभारी उपस्थित हुए। बैठक की मुख्य-मुख्य बातें इस पत्रिका में इस आशय से प्रकाशित की जा रही है कि सभी स्टाफ सदस्य राजभाषा हिंदी और प्रादेशिक भाषाओं में काम करने के प्रति जागरूक हो सकें। जिन स्टाफ सदस्यों को हिंदी अच्छी आती है अर्थात वे हिंदी में प्रवीण हैं तो वे दूसरों को भी अपना सहयोग देकर अपनी प्रतिभा का इस ओर उपयोग करें ताकि बैंक राजभाषा की राह में और तीव्रता से आगे बढ़ सके।

समीक्षा बैठक में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के श्री अनुप कुमार श्रीवास्तव, (आई.ए.एस) मुख्य अतिथि के रूप में पधारे। मुख्य अतिथि महोदय ने बैंकों द्वारा किए जा रहे राजभाषा संबंधी कार्यों की सराहना की। 'राजभाषा प्रयोग आपसी संवाद सार्थक दिशा' के अंतर्गत वित्तीय सेवाएं विभाग द्वारा आयोजित यह कार्यक्रम दो दिनों का था जिसमें एक दिन समीक्षा बैठक और दूसरे दिन अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन आयोजित किया गया था।

सचिव महोदय ने समीक्षा बैठक में उपस्थित सभी महाप्रबंधकों व राजभाषा प्रभारियों का मार्गदर्शन किया और राजभाषा कार्यान्वयन की गति में तीव्रता लाने का आह्वान किया। बहुत ही सीधी और सरल भाषा में माननीय सचिव महोदय ने बैंकों में राजभाषा कार्यान्वयन के सभी पहलुओं पर अपना मार्गदर्शन दिया। उन्होंने वार्षिक कार्यक्रम 2016-17 पर पूरी तरह से कार्रवाई करने के आदेश दिए। उन्होंने कहा कि वार्षिक कार्यक्रम में दिए गए लक्ष्यों को प्रभावी ढंग से कार्यान्वित करवाना राजभाषा अधिकारियों का दायित्व है, वे उच्चाधिकारियों के सहयोग से इन लक्ष्यों को किसी भी हालत में प्राप्त करें। साथ ही मोबाइल में एसएमएस हिंदी में भेजने का प्रकरण भी उठाया। श्री श्रीवास्तव जी ने ग्राहक सेवा बैठकें, जागरूकता शिविर आदि में हिंदी के प्रयोग पर बल दिया। उन्होंने कहा कि छोटे-छोटे निर्णयों से बैंकों में राजभाषा कार्यान्वयन को नई दिशा दी जा सकती है। जैसे यदि यह निर्णय ले लिया जाए कि कोई भी टीम कार्यक्रम तब तक पास नहीं किया जाएगा जब तक वह हिंदी में न हो। ऐसे निर्णयों से न केवल हिंदी में कार्य करने का माहौल बनेगा बल्कि उच्चाधिकारियों में भी राजभाषा कार्यान्वयन के प्रति गंभीरता भी दिखाई देगी। मुख्य अतिथि महोदय ने पुरस्कार योजनाओं को भी प्रभावी ढंग से कार्यान्वित करने के आदेश दिए।

उद्घाटन सत्र में सचिव महोदय का धन्यवाद ज्ञापित करते हुए वित्तीय सेवाएं विभाग के संयुक्त निदेशक (राजभाषा) डॉ. वेद प्रकाश दुबे जी ने सचिव महोदय के आदेशों को बैंकों द्वारा पूरी तरह से कार्यान्वित करने का आश्वासन दिया।

समीक्षा बैठक एवं अखिल भारतीय सम्मेलन में आई.टी. क्षेत्र में हिंदी के प्रयोग, राजभाषा एवं क्षेत्रीय भाषाओं में बैंकिंग परिचालन व ग्राहक सेवा क्षेत्र में किए गए गुणवत्ता कार्य, हिंदी न जानने वाले कार्मिकों को हिंदी का सेवाकालीन अनिवार्य प्रशिक्षण प्रदान करना तथा राजभाषा विभाग गृह मंत्रालय द्वारा जारी किए गए विभिन्न आदेशों-अनुदेशों पर चर्चा की गई।

इस अवसर पर वित्तीय सेवाएं विभाग द्वारा 9 अतिथि वक्ताओं को आमंत्रित किया गया था जिसमें हमारे बैंक के मुख्य प्रबंधक (राजभाषा) श्री राजिंदर सिंह बेदली भी सम्मिलित थे। श्री बेदली ने 'ग्राहक सेवा में भाषा, देश भाषा एवं शब्दों का महत्व' विषय पर अपने विचार रखे जिसकी प्रशंसा डॉ. दुबे सहित उपस्थित सभी उच्चाधिकारियों ने की।

वित्त मंत्रालय, वित्तीय सेवाएं विभाग द्वारा आयोजित यह दो दिवसीय समीक्षा बैठक और सम्मेलन, सकारात्मक नजरिए से राजभाषा कार्यान्वयन के आश्वासन के साथ ही सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।

- प्र.का.राजभाषा विभाग

ट्यूलिप मेनिया

याशिका कलोटा

माया मरी न मन मरा, मर-मर गया शरीर
आशा तृष्णा न मरी, कह गये संत कबीर।
- कबीर

संत कबीर का यह प्रसिद्ध दोहा मनुष्य की एक बहुत ही विशेष प्रकृति से अवगत कराता है। यह हमें अवगत कराता है कि किसी भी चीज़ को पाने की मनुष्य की इच्छा से। कुछ प्राप्त करने की इच्छा चाहे तो मनुष्य को आकाश की ऊँचाई तक ले जा सकती है या उसे पागलपन की गहरी खाई में पहुँचा सकती है और जब इस प्रकार की किसी चीज को पाने की इच्छा समाज के बहुत सारे व्यक्तियों में एक साथ आती है उस समय इतिहासकार को अपनी कलम से एक नया रोमांचक अध्याय लिखने का मौका मिलता है।

ऐसा ही एक उदाहरण है 'ट्यूलिप मेनिया'। ट्यूलिप मेनिया डच स्वर्ण युग का एक ऐसा समय था जब लोगों ने ट्यूलिप जैसे फूल के दाम को असामान्य रूप से बढ़ते और उसी असामान्य रूप से गिरते हुए देखा। ट्यूलिप मेनिया का उदाहरण अक्सर पहले बड़े वित्तीय बुलबुले के रूप में दिया जाता है। ट्यूलिप फूल को अक्सर हॉलैंड के साथ ही जोड़ा जाता है पर ट्यूलिप हॉलैंड की पैदाइश नहीं है। यह फूल कैरोलस क्यूसियस नाम के एक वनस्पति वैज्ञानिक के द्वारा 1593 में औषधीय प्रयोजनों में अनुसंधान करने के उद्देश्य से हॉलैंड में लाया गया था। अगर क्यूसियस के पड़ोसी नैतिक रूप से ईमानदार होते तो ट्यूलिप शायद अभी भी बागवानी में दुनिया में एक दुर्लभ फूल होता, पर पैसे के लालच में उन्होंने क्यूसियस के बगीचे में घुस कर ट्यूलिप के फूल बेचने शुरू किए जिससे ट्यूलिप व्यापार की शुरुआत हुई।

इस प्रकार के नए फूल को देखकर हॉलैंड देश के निवासियों में एक अजीब सी उत्सुकता जाग गई, पर यह नया फूल हॉलैंड वासियों के लिए और भी उत्सुकता का कारण बन गया जब ट्यूलिप को एक गैर घातक प्रकार के वायरस ने जकड़ लिया। इस वायरस से ट्यूलिप की संख्या तो कम नहीं होती थी पर ट्यूलिप की पंखुड़ियों में एक अलग सा पैटर्न आ जाता जिससे उसकी खूबसूरती और निखर कर आती। ट्यूलिप की पंखुड़ियों में आने वाला यह पैटर्न होता भी अलग-अलग रंगों में था, जिससे यह अनूठा फूल और दुर्लभ हो गया।

इस प्रकार ऊँचे दाम में बिकने वाले इस ट्यूलिप फूल की कीमत और बढ़ गई और यह कीमत वायरस द्वारा परिवर्तन किए गए उसके रूप पर निर्भर करने लगी। धीरे-धीरे सभी ने ट्यूलिप का सौदा करना शुरू कर दिया। ट्यूलिप के व्यापारियों ने अपने स्टॉक को भरना शुरू कर दिया था जिससे ट्यूलिप की सप्लाई कम हो जाती और उसकी मांग बढ़ जाती।

जल्द ही ट्यूलिप के दाम इतने अधिक बढ़ने लगे कि लोगों ने अपनी जमा पूंजी, अपनी जमीन को चन्द ट्यूलिप के फूलों के लिए दाव पर लगाना शुरू कर दिया। कहा जाता है कि उस समय एक वाईसराय ट्यूलिप की कीमत 2500 फलोरियंस (एक प्रकार की पुरानी ब्रिटिश मुद्रा) थी जो मौजूदा अमेरिकी

डॉलर में 1250 डॉलर के बराबर होती और दुर्लभ बिकने वाले Semper August की कीमत उससे दुगनी थी।

सन् 1623 में एक किस्से में तो यहां तक सुना गया कि एक ट्यूलिप व्यापारी ने तो 12000 गिल्डर जो की एमस्टरडम में एक घर की कीमत है के प्रस्ताव को भी कम होने के कारण ठुकरा दिया। 1633 तक आते-आते एक अकेले Semper August की कीमत 5500 गिल्डर हो गई थी और 1637 तक दुगनी होकर 10,000 गिल्डर हो गई थी। इतिहासकार माईक डैश के अनुसार यह रकम एक पूरे डच परिवार की आधे जीवन की जरूरतों को पूरा करने, एक 30 फुट बगीचे के साथ आलिशान घर के बगीचे को खरीदने के लिए पर्याप्त थी और यह वो समय था शहर में घर उतने ही कीमती थे जितने पूरी दुनिया में थे।

1636-1637 तक ट्यूलिप मैनिया अपनी चरम सीमा पर था। ट्यूलिप व्यापारी नियमित रूप से इस व्यापार में पैसा कमा और खो रहे थे। एक अच्छा व्यापारी एक महीने में तकरीबन 60,000 गिल्डर तक कमा लेता था जो कि मौजूदा अमेरिकी डॉलर में 6,11,710/- रुपए के बराबर होता।

पर हर व्यापार में एक समय होता है जब उसमें उछाल के बाद गिरावट आती है। ट्यूलिप के व्यापार में यह समय तब आया

जब हार्लेम (उत्तर हॉलैंड के प्रांत की राजधानी) में एक क्रेता ट्यूलिप की खरीदारी और उसके भुगतान में विफल रहा। यह खबर को सुनते ही हॉलैंड में ट्यूलिप के दाम पहले धीरे-धीरे फिर तेजी से गिरने लगे। जल्द ही सब लोगों ने ट्यूलिप को बेचना शुरू कर दिया पर इसे समय उस खरीदने के लिए कोई भी तैयार नहीं था। लोगों के बीच में यह खबर सुन कर सन्नाटा फैल गया। व्यापारियों ने सौदा करना बंद कर दिया और बहुत ही जल्द लोगों को आभास हुआ कि थोड़ी सी हरियाली के पीछे उन्होंने अपनी जीवन भर की जमा पूंजी को नष्ट कर दिया था। इस प्रकार ट्यूलिप मैनिया का अंत हुआ और डच लोगों को अहसास हुआ कि ट्यूलिप का व्यापार करने से बेहतर ट्यूलिप की खूबसूरती निहारने में ही उनकी भलाई थी।

आजकल के वित्तीय बुलबुले जैसे कि रियल इस्टेट, डॉट काम को देखकर यह लगता है कि आधुनिक मनुष्य अपनी इच्छाओं को पूरा करने के लिए किसी भी हद तक जा सकता है पर इतिहास में मुड़ कर देखने पर समझ आता है कि यह कोई नया किस्सा नहीं है कैसे एक छोटे से फूल को पाने की चाह एक देश की अर्थव्यवस्था को भी हिला कर रख सकती है।

- प्रधान कार्यालय, मानव संसाधन विकास विभाग

बैठक

18.6.2016 को प्रधान कार्यालय में राजभाषा विभाग द्वारा तिमाही बैठक का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता, कार्यकारी निदेशक, श्री मुकेश जैन ने की। बैठक में कार्यकारी निदेशक श्री अरविंद कुमार जैन के साथ सभी महाप्रबंधक तथा विभागाध्यक्ष उपस्थित थे।

निरीक्षण

बादशाह चौक, श्रीनगर शाखा का राजभाषा निरीक्षण करते हुए महाप्रबंधक श्री दीन दयाल शर्मा तथा मुख्य प्रबंधक श्री राजिन्दर सिंह बेदती। सामने है श्री धर्मेन्द्र, शाखा प्रमुख।

शाखा कार्मिकों से बातचीत करते हुए श्री दीन दयाल शर्मा, महाप्रबंधक (राजभाषा)

नराकास उपलब्धियाँ

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, बठिण्डा द्वारा हमारे बैंक के आंचलिक कार्यालय बठिण्डा को सर्वश्रेष्ठ कार्यालय चुना गया। दिनांक 18.05.2016 को संपन्न नराकास बठिण्डा की छमाही बैठक में प्रधान आयकर आयुक्त, श्री के. एम. बाली तथा श्री प्रमोद शर्मा, उपनिदेशक, गृह मंत्रालय, उत्तर क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, राजभाषा विभाग द्वारा हमारे बैंक के श्री आर. एस. कपूर, आंचलिक प्रबंधक बठिण्डा से राजभाषा ट्रॉफी (प्रथम पुरस्कार) प्राप्त की।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, फरीदाबाद द्वारा हमारे बैंक की ओल्ड फरीदाबाद शाखा को राजभाषा कार्यान्वयन में श्रेष्ठ निष्पादन के लिए पुरस्कृत किया गया। चित्र में नराकास फरीदाबाद के सदस्य सचिव श्री चरण सिंह तथा नराकास अध्यक्ष श्री एस. एम. गोरवाल से राजभाषा ट्रॉफी प्राप्त करते हुए हमारे बैंक के मुख्य प्रबंधक एवं शाखा प्रभारी श्री अनिल कुमार तथा राजभाषा प्रबंधक श्री त्रिलोचन सिंह।

एक-एक अंकुर

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जोधपुर द्वारा हमारी जोधपुर शाखा को वर्ष 2015-16 का राजभाषा में श्रेष्ठ कार्य निष्पादन हेतु तृतीय पुरस्कार प्राप्त हुआ।

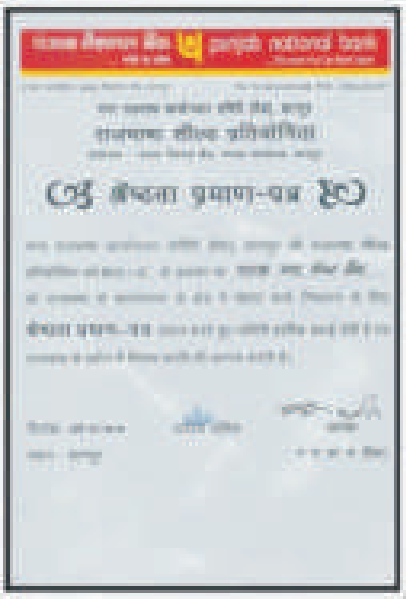

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक) कानपुर द्वारा हमारे बैंक की कानपुर शाखा को राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में बेहतर कार्य निष्पादन के लिए श्रेष्ठता प्रमाण पत्र प्रदान किया गया।

बैंकिंग व्यवसाय : नैतिक गुणों की चाबी

हिना कुमारी

बचपन में स्कूल में पढ़ा था - 'जहां न पहुंचे रवि वहां पहुंचे कवि' आज के समय में यह कहावत होगी 'जहां न पहुंचे रवि वहां पहुंचे पीएसबी'। लेह लद्दाख जैसी गगनचुंबी पर्वत श्रृंखलाएं हों या बंगाल की खाड़ी, चीन समुद्र में बसा अंडमान-निकोबार द्वीप समूह हो या देश का भीड़-भाड़ वाला मेट्रो शहर या मात्र दो हजार निवासियों का सुनसान दूर-दराज का गांव हो, वहां पर एक न एक बैंक शाखा तो अवश्य ही उपलब्ध होगी और अगर बैंक है तो उसको चलाने वाला बैंक कर्मी भी होगा। बैंक सेवा, कर्मियों को जहां एक ओर यह आत्मिक संतुष्टि देती है कि वे समाज/देश के आर्थिक विकास में एक अहम भूमिका अदा कर रहा है वहां कर्मचारीगण अपने काम में इतने व्यस्त रहने के कारण कभी यह नहीं सोचते कि वे जिंदगी के मूलभूत गुणों को कितना ग्रहण कर रहे हैं।

क्या हैं ये गुण? आइए.... जानें :

नियमितता

आम जिंदगी में नियमितता का बहुत महत्व है। बैंकिंग व्यवसाय में अन्य विभागों की तुलना में बहुत ही कम राजपत्रित अवकाश मिलते हैं। अतः कर्मचारियों को साप्ताहिक अवकाश को छोड़कर लगभग पूरा वर्ष नियमित रूप से बैंक में आना पड़ता है, जिससे वे इस गुण को आत्मसात कर लेते हैं।

समय की पाबंदी

काम का दबाव व ग्राहकों की बढ़ती अपेक्षाओं व उच्च अधिकारियों के यहां ई-मेल/फैक्स/दूरभाष के माध्यम से शिकायत हो जाने के भय से और अन्य कारणों से सामान्यतः पूरा स्टाफ ठीक समय पर अपनी ड्यूटी पर आता है। अन्य सरकारी विभागों की तुलना में एक बैंक कर्मचारी समय की पाबंदी का नैतिक गुण अपने जीवन में अपना लेता है।

ईमानदारी

आज के जमाने में ईमानदारी समाज में व्याप्त बेईमानी के चलते एक गहने के समान प्रतीत होती है। ग्राहकों में व्याप्त जागरूकता, उच्च अधिकारियों को लिखित माध्यमों से की जाने वाली शिकायतों का भय आदि कारणों से लगभग 99.9 प्रतिशत बैंक कर्मी ईमानदार हैं, इसी कारण एक बैंक कर्मी

ईमानदारी का यह बहुत बड़ा गुण स्वतः ही ग्रहण करता चला जाता है।

सहनशीलता

चूंकि बैंकिंग व्यवसाय, सेवा-व्यवसाय में आता है, वहां ग्राहक ही सर्वेसर्वा है। इस बात पर जोर दिया जाता है कि बैंक कर्मी एक बच्चे (विद्यार्थी खाता धारक) से लेकर वरिष्ठ नागरिकों की सेवा करें। फिर चाहे ग्राहक झगड़ालू हो या शिकायती प्रकृति का हो। चाहे अनाप-शनाप बोलने वाला हो या फिर गुस्सैल, हर तरह के ग्राहक को झेलना पड़ता है। ऐसे ग्राहक भी होते हैं जो कटे-फटे, नकली नोट लाते हैं, कुछ जाली

अपने को संकट में डाल कर कार्य संपन्न करने वालों की विजय होती है, कायरों की नहीं।

हस्ताक्षर करेंगे, कुछ ऋण आदि के लिए आप पर दबाव डालेंगे, कुछ बैंकिंग नियमों को ताक पर रखेंगे। जो भी हो, आपको धैर्य से काम लेना है। चुप रहना है, तू-तू, मैं-मैं नहीं करनी है। सहनशीलता का यह गुण आप अपने जीवन में कहीं और ग्रहण नहीं कर पाएंगे। सहनशीलता की यह घुट्टी आपको बैंक में घोल-घोल कर पिलाई जाएगी।

त्याग-भाव

एक बैंक अधिकारी को तो संत-महात्माओं द्वारा बताए गए अध्यात्म के कई अध्याय बैंक में ही सीखने को मिलते हैं। जीते जी मरने का अभ्यास यहीं सीखने को मिलता है। नौकरी में स्थानांतरण उपरांत अपने घर/परिवार/बाल-बच्चों को छोड़कर हजारों किलोमीटर दूर अकेले रहना पड़ता है ऐसा त्याग जो कि सामान्यतः एक आदमी को प्राकृतिक रूप से मरणोपरांत करना पड़ता है, वह बेचारा जीते जी ही मोह-ममता त्याग कर देश के एक कोने से दूसरे कोने में अनजान शहर/अनजान लोगों के बीच काम करता रहता है। इस कला का अर्जन भी एक बैंक कर्मी स्वतः ही कर लेता है।

फुर्तीलापन/चौकन्नापन

आज के इस दौर में जहां हर व्यक्ति रातों-रात मालामाल बनना चाहता है वहां समाज विरोधी तत्व नकली नोट/जाली हस्ताक्षर/जाली दस्तावेज़/जाली रजिस्ट्री/जाली डिग्री/जाली डेबिट/क्रेडिट कार्ड, इंटरनेट का सहारा लेकर बैंक को लूटने/ठगने का प्रयत्न करते हैं। इन सब के बीच फंसता है बेचारा गरीब बैंक कर्मी। तो यह अपेक्षा की जाती है कि बैंक अधिकारी हमेशा चौकन्ना, सावधान होकर काम करे। हमेशा सजग व सचेत रहकर बैंक कर्मी यह गुण अपनी जिंदगी में उतार लेता है।

धन्य है बैंक कर्मी, जो 'एक पंथ दो काज' की लोकोक्ति के आधार पर काम करते-करते नैतिक मूल्यों को ग्रहण करता जाता है।

-आंचलिक कार्यालय, जालंधर

पत्रिका की डाक सूची में संशोधन

प्रिय पाठक,

आपका नाम पी एंड एस बैंक 'राजभाषा अंकुर' पत्रिका की डाक सूची में डला हुआ है और हमारा प्रयास रहता है कि पत्रिका आपको निरंतर मिलती रहे। पाठकों के द्वारा भेजे जा रहे उच्च स्तरीय लेखों, जानकारीपरक रचनाओं, छायाचित्रों और अन्य उपयोगी सामग्री के सहयोग से पत्रिका भारतीय रिज़र्व बैंक तथा सहित अन्य संस्थानों द्वारा विभिन्न पुरस्कार पाने में सफल रही है। पत्रिका के बारे में हम आपके विचार भी जानना चाहते हैं। पत्रिका की डाक सूची में आवश्यक संशोधन किया जा रहा है। यदि आप पत्रिका को अपने लिए उपयोगी मानते हैं और चाहते हैं कि पत्रिका आपको भविष्य में भी प्राप्त होती रहे तो आप कृपया अपना नाम, पूरा पता और फोन या मोबाइल नं संपादक, पी एस बी 'राजभाषा अंकुर' पत्रिका, पंजाब एण्ड सिंध बैंक, प्रधान कार्यालय, राजभाषा विभाग, प्रथम तल, बैंक हाउस, 21 राजेन्द्र प्लेस, नई दिल्ली - 110 125 को अथवा hindipatrika@psb.co.in को भिजवा दें। आपकी ओर से कोई जानकारी प्राप्त न होने की स्थिति में हम भविष्य में आपको अपनी संशोधित डाक सूची में डालने में असमर्थ रहेंगे।

- मुख्य संपादक एवं महाप्रबंधक (राजभाषा)

हिंदी के प्रयोग के लिए वर्ष 2016-17 का वार्षिक कार्यक्रम

क्र. सं.	कार्य विवरण	"क" क्षेत्र	"ख" क्षेत्र	"ग" क्षेत्र
1.	हिंदी में मूल पत्राचार (ई-मेल, फैक्स, तार, टेलेक्स आदि सहित)	1. क क्षेत्र से क क्षेत्र को 100% 2. क क्षेत्र से ख क्षेत्र को 100% 3. क क्षेत्र से ग क्षेत्र को 65% 4. क क्षेत्र से क व ख क्षेत्र 100% के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	1. ख क्षेत्र से क क्षेत्र को 90% 2. ख क्षेत्र से ख क्षेत्र को 90% 3. ख क्षेत्र से ग क्षेत्र को 55% 4. ख क्षेत्र से क व ख क्षेत्र 100% के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	1. ग क्षेत्र से क क्षेत्र को 55% 2. ग क्षेत्र से ख क्षेत्र को 55% 3. ग क्षेत्र से ग क्षेत्र को 55% 4. ग क्षेत्र से क व ख क्षेत्र 85% के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति
2.	हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना	100%	100%	100%
3.	हिंदी में टिप्पण	75%	50%	30%
4.	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना	100%	100%	100%
5.	अंग्रेजी और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोड़कर पुस्तकालय के कुल अनुदान में से डिजिटल वस्तुओं अर्थात् हिंदी ई-पुस्तक, सीडी/डीवीडी, पैनड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद पर व्यय की गई राशि सहित हिंदी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय।	50%	50%	50%
6.	कंप्यूटर सहित सभी प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की द्विभाषी रूप में खरीद।	100%	100%	100%
7.	वेबसाइट	100% (द्विभाषी)	100% (द्विभाषी)	100% (द्विभाषी)
8.	नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्डों आदि का प्रदर्शन	100% (द्विभाषी)	100% (द्विभाषी)	100% (द्विभाषी)
9.	(i) मंत्रालयों/विभागों और कार्यालयों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों (उ.स./निदे./सं.स.) द्वारा अपने मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण (कार्यालयों का प्रतिशत)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)
	(ii) मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)
10.	कोड, मैनुअल, फॉर्म, प्रक्रिया और साहित्य का हिंदी अनुवाद	100%		
11.	मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों/बैंकों/उपक्रमों के ऐसे अनुभाग जहाँ संपूर्ण कार्य हिंदी में हो।	"क" क्षेत्र 40%	"ख" क्षेत्र 30%	"ग" क्षेत्र 20%

(न्यूनतम अनुपात)
सार्वजनिक क्षेत्र के उन उपक्रमों/निगमों आदि, जहाँ अनुभाग जैसी कोई अवधारणा नहीं है, "क" क्षेत्र में कुल कार्मिक का 40%, "ख" क्षेत्र में 25% और "ग" क्षेत्र में 15% कार्य हिंदी में किया जाए।

स्वतंत्र वही हो सकता है जो अपना काम अपने आप कर लेता है।

कार्यशाला

प्रधान कार्यालय, राजभाषा विभाग

आंचलिक कार्यालय, हरियाणा

आंचलिक कार्यालय, पटियाला

आंचलिक कार्यालय, बठिण्डा

आंचलिक कार्यालय, चंडीगढ़

आंचलिक कार्यालय, बरेली

आंचलिक कार्यालय, गुड़गांव

आंचलिक कार्यालय, अमृतसर

सहभागी कार्मिक

आगरा
ऐतिहासिक नगरी

रूप कुमार

विश्व का सातवां अजूबा ताजमहल आगरा की पहचान है जोकि यमुना नदी के किनारे बसा हुआ है। ऐतिहासिक नगरी आगरा उत्तर प्रदेश प्रांत का तीसरा सबसे बड़ा शहर है जिसे ताज की नगरी (सिटी ऑफ ताज) के नाम से भी जाना जाता है।

आगरा शहर को सिकंदर लोदी ने सन् 1506 ई. में बसाया। आगरा मुगल साम्राज्य की चहेती जगह थी जो सन् 1526 ई. से 1658 ई. तक मुगल साम्राज्य की राजधानी रही। आज भी आगरा मुगलकालीन इमारतों जैसे - ताजमहल, लाल किला, फतेहपुर सीकरी आदि की वजह से एक विख्यात पर्यटन स्थल है। ये तीनों इमारतें यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल की सूची में शामिल हैं। बाबर (मुगल साम्राज्य का जनक) ने यहाँ चौकोर (आयताकार एवं वर्गाकार) बागों का निर्माण करवाया। आइए, आगरा के कुछ मशहूर दर्शनीय स्थलों की जानकारी प्राप्त करते हैं :-

दर्शनीय स्थल

ताजमहल

ताजमहल विश्व के 7 अजूबों में से एक है जिसको मुगल बादशाह शाहजहाँ ने अपनी बेगम मुमताज महल की याद में बनवाया। बीस हजार कारीगरों की अथक मेहनत से इस स्मारक को पूर्णतया बनने में बाईस वर्ष (1630-1652) लगे तथा इसका निर्माण सन् 1653 ई. में पूरा हुआ। पूरे श्वेत संगमरमर में तराशा हुआ यह भारत की ही नहीं अपितु विश्व की भी अत्युत्तम कृति है। यह भारतीय, पर्सियन और इस्लामिक वास्तुशिल्पीय शैली के मिश्रण का उत्कृष्ट उदाहरण है। फारसी वास्तुकार उस्ताद ईसा खाँ के दिशा-निर्देश में इसे यमुना नदी के किनारे पर बनवाया गया। इसे मृगतृष्णा रूप में आगरा के किले से देखा जा सकता है, जहाँ से शाहजहाँ जीवन के अंतिम 8 वर्षों में अपने पुत्र औरंगजेब द्वारा कैद किए जाने पर देखा करता था। ताज को एक लाल बलुआ पत्थर के चबूतरे पर बने श्वेत संगमरमर के चबूतरे पर बनाया गया है। ताज की सर्वाधिक सुंदरता इसकी इमारत के बराबर ऊँचे महान गुम्बद में बसी है। यह 60 फीट व्यास का, 80 फीट ऊँचा है। इसके नीचे ही मुमताज की कब्र है तथा इसके बराबर में शाहजहाँ की भी कब्र है।

महताब बाग

महताब बाग का अर्थ होता है 'चांद की रोशनी का बाग'। यह ताजमहल से विपरीत यमुना के दूसरे किनारे पर स्थित है। यहाँ का माहौल बेहद शांत है। कहा जाता है कि यहाँ एक काला ताजमहल बनना तय हुआ था जिसमें शाहजहाँ की कब्र बननी थी किंतु धन के अभाव एवं औरंगजेब की नीतियों के कारण वह बन नहीं पाया। दुर्भाग्यवश, यह बाग मुगलकाल से लेकर अब तक यमुना नदी में आने वाली बाढ़ की चपेट में रहा है। इसके कारण बाग की खूबसूरती नष्ट हो गई है और यह उजड़ सा गया है। यह ताजमहल के सममितीय बना है क्योंकि इसकी चौड़ाई ताजमहल की चौड़ाई के ठीक बराबर है। बाग के बीच में एक बड़ा सा अष्टभुजीय तालाब है जिसमें ताजमहल का प्रतिबिंब बनता है। पर्यटक इस बाग से ताजमहल की अनुपम छटा को निहारते हैं।

चीनी का रोजा

चीनी का रोजा शाहजहाँ के मंत्री अल्लामा अफजल खान शकरउल्ला शिराज को समर्पित है। यह अपने चमकीले नीले रंग के गुम्बद के लिये दर्शनीय है। सन् 1635 ई. में बने इस खूबसूरत मकबरे का नाम इसको बनाने में इस्तेमाल हुए

पत्थरों के नाम पर पड़ा। यह मकबरा उस समय की मुगल वास्तुशिल्प पर पारसी प्रभाव को दर्शाता है। इसे देखकर बताया जा सकता है कि यह आगरा की एकमात्र पारसी इमारत है।

जामा मस्जिद

जामा मस्जिद एक विशाल मस्जिद है जो शाहजहाँ की पुत्री शहजादी जहाँआरा बेगम को समर्पित है। इसका निर्माण सन् 1648 ई. में हुआ था और यह अपने मीनार रहित ढाँचे तथा विशेष प्रकार के गुम्बद के लिये जानी जाती है ।

सिकन्दरा (अकबर का मकबरा)

आगरा किला से लगभग 13 किलोमीटर की दूरी पर सिकंदरा में महान मुगल सम्राट अकबर का मकबरा है। यह मकबरा उसके व्यक्तित्व की पूर्णता को दर्शाता है। यह हिंदू, ईसाई, इस्लामिक, बौद्ध और जैन कला का सर्वोत्तम मिश्रण है। लाल बलुआ पत्थर से निर्मित यह विशाल मकबरा हरे भरे उद्यानों के बीच स्थित है। अकबर ने स्वयं ही अपने मकबरे की

रूपरेखा तैयार करवाई थी और स्थान का चुनाव भी उसने स्वयं ही किया था। अपने जीवनकाल में ही अपने मकबरे का निर्माण करवाना एक तुर्की प्रथा थी जिसका मुगल शासकों ने धर्म की तरह पालन किया। अकबर के पुत्र जहाँगीर ने इस मकबरे का निर्माण कार्य सन् 1613 ई. में संपन्न कराया ।

फतेहपुर सीकरी

"सीकरी में एक सूफी सन्त शेख सलीम चिश्ती रहा करते थे। उनकी शोहरत सुनकर अकबर एक पुत्र की कामना लेकर उनके पास पहुंचे क्योंकि अकबर की कई रानियाँ और बेगम थीं किंतु उनमें से किसी को भी पुत्र नहीं हुआ था। शेख सलीम चिश्ती ने अकबर को दुआ दी। दैवयोग से अकबर की बड़ी रानी जो कछवाहा राजा बिहारीमल की पुत्री और भगवानदास की बहिन थी, गर्भवती हो गई और उसने पुत्र को जन्म दिया। उसका नाम शेख के नाम पर सलीम रखा गया जो बाद में जहाँगीर के नाम से अकबर का उत्तराधिकारी हुआ। अकबर सूफी संत से बहुत प्रभावित था। उसने अपनी राजधानी सीकरी में ही रखने का निश्चय किया। सन् 1571 ई. में राजधानी का स्थानांतरण किया गया। उसी साल अकबर ने गुजरात को फतह किया, इस कारण नई राजधानी का नाम फतेहपुर सीकरी रखा गया। यह आगरा से लगभग 35 कि.मी. दूर है।"

सन् 1584 ई. तक लगभग 14 वर्ष तक फतेहपुर सीकरी ही मुगल साम्राज्य की राजधानी रहा। सम्राट अकबर ने यहाँ अनेकों भव्य इमारतें बनवाई। इस स्थान में पानी की बड़ी कमी थी, जिसको पूरा करने के लिए पहाड़ी पर बाँध बना कर एक झील बनाई गई। उसी का पानी राजधानी में आता था। बाद में यह बाँध टूट गया जिससे पर्याप्त हानि हुई। 14 वर्ष तक सीकरी में राजधानी रखने पर अकबर ने अनुभव किया कि यह स्थान उपयुक्त नहीं है, अतः सन् 1584 ई. में पुनः राजधानी आगरा बनाई गई। राजधानी के हटते ही फतेहपुर सीकरी का ह्रास होने लगा। आजकल यह एक छोटा सा कस्बा रह गया है।

इस किले के भीतर पंचमहल है जो एक पाँच मंजिला इमारत है और बौद्ध विहार शैली में बना है। इसकी पांचवी मंजिल से मीलों दूर तक का दृश्य दिखायी देता है। जामा मस्जिद संभवतः पहला भवन था जो निर्मित किया गया। बुलंद दरवाजा लगभग 5 वर्ष बाद जोड़ा गया। अन्य महत्वपूर्ण भवनों में हकीम का घर, मरियम का निवास (जिसे सुनहरा मकान भी कहते हैं), जोधाबाई का महल, बीरबल का निवास, आँख-मिचौली, दीवान-ए-खास, अनूप-तालाब आदि शामिल हैं।

बुलंद दरवाजा

फतेहपुर सीकरी का बुलंद दरवाजा, विश्व का सबसे ऊँचा दरवाजा है। इसकी ऊंचाई भूमि से 280 फुट है। 52 सीढ़ियों के पश्चात दर्शक दरवाजे के अंदर पहुंचता है। यह लाल और शौकीन बलुआ पत्थर से बना है। इसके मध्य चेहरे पर एक शिलालेख है जो अकबर की धार्मिक समझ का दायरा दर्शाता है। इसके उत्तर में शेख सलीम चिश्ती की दरगाह है जहाँ

निःसंतान महिलाएं दुआ मांगने आती हैं। यह एक विश्व धरोहर स्थल है।

बुलंद दरवाजे को सन् 1602 ई. में अकबर ने अपनी गुजरात-विजय के स्मारक के रूप में बनवाया था। इसी दरवाजे से होकर शेख की दरगाह में प्रवेश करना होता है। बाईं ओर जामा-मस्जिद है और सामने शेख की मजार। मजार या समाधि के पास उनके संबंधियों की कब्रें हैं। मस्जिद और मजार के समीप एक घने वृक्ष की छाया में एक छोटा संगमरमर का सरोवर है। मस्जिद में एक स्थान पर एक विचित्र प्रकार का पत्थर लगा है जिसको थपथपाने से नगाड़े की ध्वनि सी होती है।

दीवान-ए-खास

रुकैया बेगम के महल के दाहिनी ओर अकबर का दीवान-ए-खास है जहाँ दो बेगमों के साथ अकबर न्याय करता था। बादशाह के नवरत्न-मन्त्री थोड़ा हट कर नीचे बैठते थे। वहाँ सामान्य जनता तथा दर्शकों के लिए चारों तरफ बरामदे बने हैं। बीच के बड़े मैदान में हनन नामक खूनी हाथी के बांधने के लिए एक मोटा पत्थर गड़ा है। यह हाथी मृ युदंड प्राप्त अपराधियों को रौंदने के काम में लाया

जाता था। कहते हैं कि यह हाथी जिसे तीन बार पादाहत करके छोड़ देता था उसे मुक्त कर दिया जाता था। दीवान-ए-खास की यह विशेषता है कि वह एक पद्माकार प्रस्तर स्तंभ के ऊपर टिका हुआ है। इसी पर आसीन होकर अकबर अपने मन्त्रियों के साथ गुप्त मन्त्रणा करता था। दीवान-ए-खास के निकट ही आंख-मिचौली नामक भवन है जो अकबर का निजी मामलों का दफ्तर था।

पंच महल

पांच मंजिला पंचमहल या हवामहल जोधाबाई के लिए सूर्य को अर्घ्य देने के लिए बनवाया गया था। यहीं से अकबर की मुसलमान बेगमें ईद का चाँद देखती थीं। इसके समीप ही मुगल राजकुमारियों का मदरसा है। जोधाबाई का महल प्राचीन घरों के ढंग का बनवाया गया था। इसके बनवाने तथा सजाने में अकबर ने अपनी रानी की हिंदू भावनाओं का विशेष ध्यान रखा था। दीवारों में मूर्तियों के लिए आले बने हैं। कहीं-कहीं दीवारों पर कृष्णलीला के चित्र हैं जो बहुत मद्धिम पड़ गए हैं। मंदिर के घंटों के चिह्न पत्थरों पर अंकित हैं। इस घर के ऊपर के कमरों को ग्रीष्मकालीन और शीतकालीन महल कहा जाता था। ग्रीष्मकालीन महल में पत्थर की बारीक जालियों में से ठंडी हवा छन-छन कर आती थी।

इस भवन के निकट ही बीरबल का महल है जो सन् 1582 ई. में बना था। इसके पीछे अकबर का निजी अस्तबल था, जिसमें 150 घोड़े तथा अनेक ऊंटों के बांधने के लिए छेददार पत्थर लगे हैं। यहाँ से पश्चिम की ओर प्रसिद्ध हिरनमीनार है। किंवदंती है कि इस मीनार के अंदर खूनी हाथी हनन की समाधि है। मीनार में ऊपर से नीचे तक आगे निकले हुए हिरन के सींगों की तरह पत्थर जड़े हैं। मीनार के पास मैदान में अकबर शिकार खेलता था और बेगमों के आने के लिए अकबर ने एक आवरण-मार्ग बनवाया था। फतेहपुर सीकरी से लगभग 1 मील दूर अकबर के प्रसिद्ध मन्त्री टोडरमल का निवास स्थान था जो अब भग्न दशा में है। प्राचीन समय में नगर की सीमा पर मोती झील नामक एक बड़ा तालाब था जिसके चिन्ह अब नहीं मिलते। वास्तव में अकबर की इस स्थापत्य कलाकृति में उसकी अपनी विशाल हृदयता तथा उदारता के दर्शन होते हैं।

ऐसा नहीं है कि आगरा सिर्फ ताजमहल तथा अन्य अमूल्य इमारतों से ही जाना जाता है। इसके अतिरिक्त भी यहाँ अन्य विशेषताएं हैं। यहाँ घूमने व खाने की कई जगह हैं। यहाँ की मिठाईयों में पेठा तो आगरे की पहचान ही है। तरह-तरह के पेठे के साथ यहाँ की नमकीन में दालमोठ दूर-देशों तक प्रसिद्ध है। शहर में व्यस्त बाजार हैं जहाँ से आप स्मृति चिह्न और स्थानीय शिल्प खरीद सकते हैं। भारत के दूसरे शहरों की तरह आगरा में भी धार्मिक उदारता साफ तौर पर देखी जा सकती है। सिर्फ पर्यटक ही नहीं, पक्षियों को भी आगरा अपनी ओर आकर्षित करता है। यहाँ कीठम झील और सुर सरोवर पक्षी अभ्यारण्य हैं जहाँ स्पूनबिल, सरन सारस, ब्राह्मनी बतख, बार-हेडेड गीसे और गाडवॉल्स, शोवेलर्स व साइबेरियन सारस जैसे प्रवासी पक्षी बड़ी संख्या में आते हैं।

- प्रधान कार्यालय, राजभाषा विभाग

सबसे अधिक ज्ञानी वही है जो अपनी कमियों को समझकर उनका सुधार कर सकता हो।

पंजाब एण्ड सिंध बैंक द्वारा संचालित ग्रामीण स्व-रोजगार प्रशिक्षण संस्थान, मोगा का निरीक्षण भारत सरकार के केंद्रीय मंत्री श्री विजय साँपला द्वारा किया गया। चित्र में माननीय श्री विजय साँपला के साथ खड़े हैं श्री जसवंत सिंह, आँचलिक प्रबंधक, फरीदकोट, श्री परमिंदर सिंह गिल, उपायुक्त जिला मोगा, श्री गुरवंत सिंह कालों (संस्थान-प्रबंधक) तथा अन्य।

पंजाब एण्ड सिंध बैंक
(भारत सरकार का उपक्रम)
जहाँ सेवा ही जीवन-ध्येय है

Punjab & Sind Bank
(A Govt. of India Undertaking)
Where service is a way of life

द्वारा आयोजित

विशेष बोनान्ज़ा स्कीम

आवास, ऑटो एवं उपभोक्ता ऋण के लिए

30-05-2016 से 30-09-2016

आवास ऋण

- न्यूनतम मासिक किश्त
- शून्य प्रोसेसिंग फीस
- आकर्षक ब्याज दर *
- अधिकतम भुगतान समय 40 वर्ष तक

4 पहिया ऑटो ऋण

- न्यूनतम मासिक किश्त
- शून्य प्रोसेसिंग फीस एवं शून्य मार्जिन
- आकर्षक ब्याज दर *
- अधिकतम भुगतान समय 7 वर्ष तक

उपभोक्ता ऋण

- न्यूनतम मासिक किश्त
- शून्य प्रोसेसिंग फीस
- आकर्षक ब्याज दर *
- अधिकतम भुगतान समय 5 वर्ष तक

कॉम्बो प्रस्ताव के अंतर्गत ऑटो-आवास ऋण, उपभोक्ता-आवास ऋण पर आकर्षक शर्तों का लाभ उठाएं
अधिक जानकारी के लिए हमारी शाखा से सम्पर्क करें अथवा हमारी वेबसाइट www.psbindia.com पर जाएं।